३१ मार्च की मार से बचने के दीवाने तरीके

३१ मार्च को वित्त वर्ष समाप्त होता है, सरकार द्वारा स्वीकृत फंड यदि ३१ मार्च तक खर्च न हो तो सरकार पैसा वापिस ले लेती है। इसलिए ३१ मार्च ज्यों-ज्यों नजदीक आता जाता है विभिन्न सरकारें व विभागें पैसा अंट-संट खर्च करना शुरू कर देती हैं ताकि अनुदान का उपयोग हो। अगर विभागों के पास पैसा बचा रहे तो अगले वर्ष के लिए हम उसे ठिकाने लगाने के कुछ दीवाने सुझाव प्रस्तुत कर रहे हैं:–



भवन निर्माण की राशि बच जाये तो उससे अफसर लोग चंडू पी सकते हैं और फिर हवाई किले बनाने में अपने समय तथा फंड का सदुपयोग कर सकते हैं।



पुल के लिए स्वीकृत अनुदान बच जाये तो अफसर अपने चमचों में बांट दे। आखिर वह भी तो पुल ही बनाते हैं। तारीफ के पुल बांधते रहते हैं।



पार्क व उद्यान निर्माण का पैसा बचा रह जाये तो कर्मचारी अपनी प्रेमिकाओं के साथ उस पैसे से सैर सपाटा कर सकते हैं। वह भी तो प्रेमिकाओं को सब्जबाग ही दिखायेंगे न।



यदि नहर के लिये मंजूर पैसा बच गया है तो उस इलाके से किसी फरहाद को ढूंढ़ कर कहा जा सकता है, 'मिस्टर फरहाद, हमने सुना कि शीरीं का बाप तुमको दूध की नहर खोदने के लिए कहता है। वैल, वैल, यह लो कांट्रेक्ट ३१ मार्च से पहले-पहले नहर खुदवा कर उसे दिखा देना।'



स्टेशनरी का पैसा बचे तो उसकी सारी स्याही खरीदी जा सकती हैं और दफ्तर वाले स्याही से होली खेल सकते हैं। होली वित्त वर्ष समाप्त होने के ठीक पहले पड़ती है।



यदि विश्वविद्यालयों के पास कागज की खरीद के लिये पैसा बच गया है तो वे मंत्रियों को थोक भाव पर ऑनरेरी डिग्रियां बांट कर कागज खपा सकते हैं।

फिल्मी विज्ञापन

दीवाना फिल्म ऐड्स

जिस प्रकार विभिन्न उद्योग वाले अपने सामान का विज्ञापन देते हैं, यदि अभिनेता तथा अभिनेत्रियां उसी तरह अपना-अपना विज्ञापन देकर प्रचार करें तो कैसा रहेगा ? उसकी एक झलक–



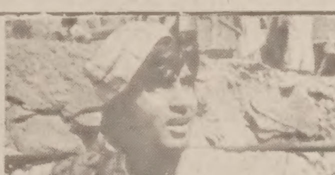
क्या आपके बाल झगड़ते हैं

क्या आपकी फिल्में पिट रही हैं ? उस कारण आपके बाल झड़ रहे हैं। आज ही बॉक्स आफिस फार्मूले वाला **बंगाल कैमिकल का मौसमी चटर्जी तेल** अपनी फिल्मों को पिलाइये।

बिल्कुल नये आकार और नए पैकेट में



पुराने सारे दोष दूर कर दिये गये हैं। अब प्रोड्यूसरों को कोई शिकायत नहीं होगी। नई परवीन बॉबी को अपनी फिल्म में अवश्य मौका दीजिए। आई. एस. आई. मार्क वाली परवीन बॉबी।



सुपर स्विश अमिताभ

हाउस फुल की गारंटी, निर्माता की हजामत नहीं होगी।

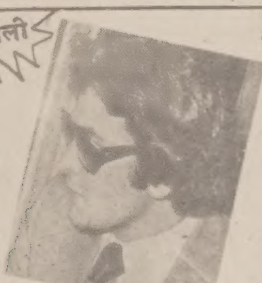


अगली फिल्म कब ?

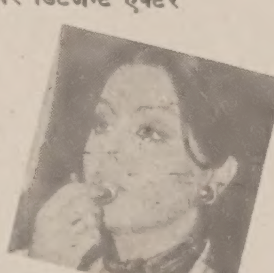
अगली फिल्म अभी नहीं; तीन के बाद कभी नहीं। 'छोटा रोल अच्छा रोल'।

शक्तिशाली

चिन्टू सुपर डिटर्जेन्ट एक्टर



चमकदार एक्टिंग के लिए नीतू के साथ प्रयोग कराने पर ३०% अधिक प्रभावकारी।

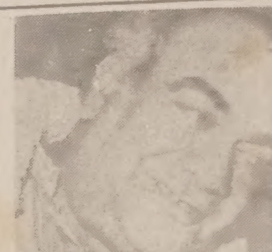


निर्माताओं के लिये किस्मत चमकाने का सबसे बढ़िया पाउडर।



बिल्कुल नये पैक में

नया क्लोरोफिल युक्त अभिनय फिल्म में जरूर आजमायें। जुबली की गारंटी।



बुढ़ापे में जवानी

प्रेमनाथ को साइन कीजिये, ऐसी चलेगी कि पैसा बरसेगा प्रोड्यूसर के नया खून दौड़ने नयी जवानी आयेगी, **विशेष अ** सैट पर मुफ्त में हंगामे और का तमाशा इसका अलग से लिया जायेगा।



"वैज्ञानिकों ने साबित कर दस में से सात व्यक्तियों को हेमा के डांस से तुरन्त खत

विशेष आकर्षण–

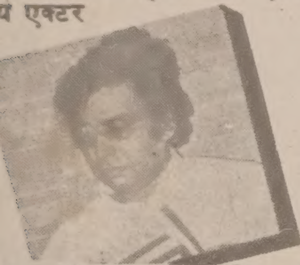
हर कांट्रेक्ट के साथ धर्मेन्द्र से मिलेगा।



एक पैकेट में दो फ

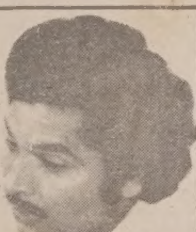
हीरो का हीरो और कॉमे इकॉनामी स्टार से बचत की।

में एक्सपोर्ट होने वाला एकमात्र
र एक्टर



ास यूरोप लंदन, अमरीका और
ो रोज मनीआर्डर द्वारा पौंड,
. पैंस आते हैं। विदेशी एक्टरों
फ के लेटर लिखे हैं। उन्हें
दफ्तर में आकर देखा जा सकता
झे अपनी फिल्म में मौका दें।
ी मूछें नीची नहीं होने दूंगा।

का खजाना

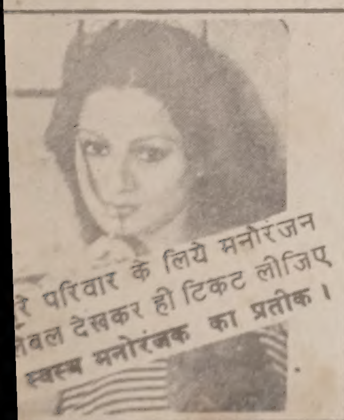


फिल्म में
जोड़ कर
द लगाइये। असरानी के लटके
सबसे आगे।



त में सर्वाधिक बिक्री वाला
अभिनेता

ी बुकिंग करा लीजिये वर्ना बाद
ताना पड़ेगा। हर फिल्म में
,कठोर जांच-पड़ताल के बाद
ी जाती है। सफलता की कुंजी
शशिकपूर।



र परिवार के लिये मनोरंजन
वल देखकर ही टिकट लीजिए
स्वस्थ मनोरंजक का प्रतीक।

यही समय है बालों को सफेद होने से रोकने का।



घटिया हीरोइनों को लेकर आप फ्लॉप पिक्चरें बना कर गम में बाल सफेद करते हैं। अभी जीनत को लेकर

हिट फिल्म बनाइए

और बालों को फिर से जड़ से काला कीजिये।



डाकू छाप काला दंत मंजन

सुनीलदत्त को लेकर डाकू वाली फिल्में बनायें। फिल्म चल पड़ेगी और लेनदार प्रोड्यूसर के दांत तोड़ने नहीं आयेंगे। याद रखिये डाकू छाप काला दंत मंजन।

आ गई बाजार में दोबारा जनता की भारी मांग पर



नये विटामिनों से युक्त, हर प्रकार के रोल अपनाने को तैयार। मोटे थैले के स्थान पर डाइटिंग द्वारा अब पतले लिफाफे के रूप में उपलब्ध है। तीन वर्ष तक न मुटाने की गारन्टी।



सुपर न्यूड विजन

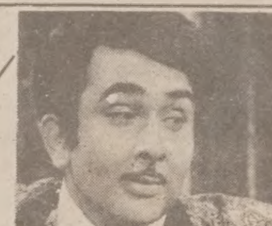
अब आसान किश्तों पर उपलब्ध है मौके का फायदा उठाइये।

क्या आप



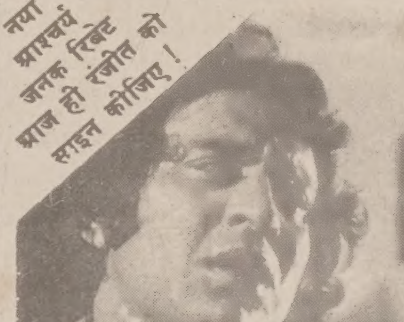
रोज सैट पर लेट आने वाले नई पीढ़ी के एक्टरों द्वारा पैदा सिरदर्द से परेशान हैं? सिर चकरा रहा है? अपनी फिल्म में नूतन को लीजिये। डेट देते ही सैट पर हाजिर।

मुफ्त-मुफ्त-मुफ्त !!



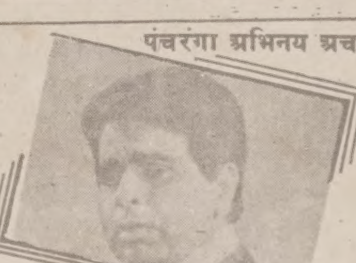
जो मुझे अपनी फिल्म में लेगा। मैं उस निर्माता को सिगरेट अपनी जेब से पिलाऊंगा। यह ऑफर ३१ मई तक ही मिलेगा।

नया आश्चर्य जनक रिबेट आज ही रंजीत को साइन कीजिए!



हर रेप सीन के साथ एक मार-पीट का सीन मुफ्त किया जायेगा।

पंचरंगा अभिनय अचार



अकेला ही बाप-बेटे, पोते-पड़पोते का रोल करता है।
अपनी फिल्म को और स्वादिष्ट बनाइये।



आपस की बातें
चचा बातूनी की कलम दवात से

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

सुरेश कुमार गुप्ता—बोरमा : मैंने एक कविता भेजी थी, क्या आपको उसकी कुछ खबर है ?

उ० : जी हां, अपना नम्बर आने की प्रतीक्षा में सम्पादक की टेबल पर लाइन में खड़ी हुई है।

★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★

नरेश कुमार आर्य—मेरठ : चाचा जी, आपकी सूरत राक्षस जैसी लगती है, क्या बच्चे आपको देख कर डरते नहीं ?

उ० : इसमें डरने की कौन-सी बात है ? लोग अपनी गाड़ी के आगे जूता लटकाते हैं ताकि नजर न लग जाये। अच्छी सूरत वाले नजर से बचने के लिये काला टीका लगा कर अच्छी सूरत को कुछ बदसूरत कर लेते हैं, फिर यह तो भगवान की कृपा है कि हम पूरे के पूरे बदसूरत हैं, यह शेर नहीं सुना आपने—

अच्छी सूरत भी क्या बुरी शै है,
जिसने डाली, बुरी नजर डाली।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

दत्त कुमार साहिल—मोगा : चाचा जी, क्या आपकी बज़्म में हम जैसे नये मेहमान भी आ सकते हैं ?

उ० : इस महफिल में सबका स्वागत है, तशरीफ लाइये और इस तरह कि लोग कहें—

मुस्कराते हुए वो आए यूं मैखाने में,
रुक गई सांस छलकते हुए पैमानों की।

★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★

उपेन्द्र कुमार मधुकर—सफियाबाद : मेरे विचार में हेमा मालिनी किसी फिल्म में पागल का रोल करे तो बहुत अच्छी रहे। आपकी क्या राय है ?

उ० : आपकी राय से अलग होकर क्या हमें पागल खाने जाना है ?

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

केवल प्रकाश—काशीपुर : अंकल, क्या जीवन में पैसा ही सब कुछ है ?

उ० : जी हां केवल उस पैसे को छोड़ कर केवल प्रकाश जी, जो आप दीवाना खरीदने पर खर्च करते हैं।

★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★

प्रीतम सिंह—रोहतक : जनता पार्टी ने बड़े-बड़े दावे किये थे। क्या वह रिश्वत और बेईमानी समाप्त कर पाई है ?

उ० : जी हां। जैसे, एक स्कूल के हैडमास्टर साहब ट्रांसफर होकर एक नए स्कूल में गये तो यह देखकर दंग रह गये कि पिछले साल वहां के हैडमास्टर ने स्कूल में एक कुआं खुदवाने के लिए अपने डिपार्टमैंट से तीन हजार रुपये की ग्रांट ली थी। कागजों के अनुसार और इन्सपेक्शन के अनुसार कुआं बना था। उसका उद्घाटन हुआ था। स्कूल के हैडमास्टर को इस शुभ काम के लिए बधाई-पत्र भी आये थे। और वास्तव में देखा तो वहां कोई कुआं नहीं था। रेकार्ड में जहां कुआं दिखाया गया था, वहां किसी ने आज तक एक फावड़ा भी नहीं मारा था। नये हैडमास्टर की 'ईमानदारी' दूर-दूर तक मशहूर थी। उसने सोचा, पुराना हैडमास्टर स्कूल के पुराने स्टाफ से मिलकर कुएं की ग्रांट के पूरे तीन हजार के तीन हजार रुपये डकार गया है। उसकी रिपोर्ट करने पर, मुझे तो कुछ मिलेगा नहीं, यह सोचकर उसने अपनी 'ईमानदारी' दिखाने का दूसरा तरीका निकाला और अपने डिपार्टमैंट को लिखा, 'पुराने हैडमास्टर ने जो कुआं बनवाया था उसका पानी अब खारी हो गया है। उसे न तो कोई पीना पसन्द करता है और न ही वह पेड़ पौधों को सींचने योग्य है। कुएं के पानी पर काई जम गई है। बड़े-बड़े मच्छर पैदा हो गये हैं। इस से आस-पास गांव में बीमारी फैलाने का खतरा है। कस्बे के लोग इस बात पर बहुत नाराज हैं। इसलिए कृपा करके इस कुएं को बन्द करवाने के लिए तीन हजार रुपये की ग्रांट मंजूर कर दी जाये।' महकमे ने केस की नजाकत को देखते हुये तुरन्त ग्रांट मंजूर कर दी और इस रकम को यह 'ईमानदार' हैडमास्टर साहब पूरी की पूरी डकार गये। इन्सपेक्शन करने वाले अधिकारियों ने भी हैडमास्टर की कार्यकुशलता की प्रशंसा की। वास्तव में स्कूल के रेकार्ड में जहां कुआं दिखाया गया था। वहां अब कुआं नहीं था।

छोटी-मोटी नहीं, बड़ी से बड़ी मिनिस्ट्री में ऐसी 'ईमानदारी' चल रही है आजकल।

बलविन्द्र कुमार सोढी—करनाल : भगवान अगले जन्म में आपको स्त्री बना दे तो कैसा रहे ?

उ० : इस उपकार के लिए हम भगवान के बाल-बच्चों को लाख-लाख दुआयें दें।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

अजय कुमार गुप्ता—तपकरा : अंकल जी, मैं आपकी सेवा करना चाहता हूं, क्या आप मेरी सेवा स्वीकार करेंगे ?



उ० : पहले यह बता दीजिए कि पांव दबाते-दबाते कहीं आपको गला दबाने की आदत तो नहीं ?

★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★

ए० एच० कादरी—बीकानेर : हर चीज की एक हद होती है, आप लगातार हमारे प्रश्नों के उत्तर दिये जा रहे हैं। क्या आपकी कुर्सी कोई दूसरा नहीं छीन सकता ?

उ० : यह कांटों का ताज पहनेगा कौन ? हमारी कुर्सी ऐसी नहीं है कि जिसे सिर दर्द का इलाज भी मालूम न हो और वह स्वास्थ्य मंत्री बन दर्दे सर बन जाये।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

राम अवतार—कानपुर : मैं आपसे प्रश्नों के उत्तर देने का कम्पीटिशन करना चाहता हूं।

उ० : इतना याद रखिये कि कई बार कम्पीटिशन करना बहुत महंगा पड़ता है। एक बार एक आदमी जेल से बाहर आया तो हमने उससे पूछा, 'क्यों भाई तुम्हें जेल क्यों जाना पड़ा ?' उसने कहा, 'सरकार से कम्पीटीशन हो गया था।' हमने हैरान होकर पूछा, 'सरकार से कम्पीटीशन हो गया था ? किस बात का ?' उसने उत्तर दिया 'नोट छापने का।'

कूपन

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली ११०००२

बन्द करो बकवास


दुनिया में ऐसा कहां सबका नसीब है। कोई-कोई अपने पिया के करीब है।
बन्द करो बकवास, माना कि चप्पू खो गये हैं पर गाना गाने की बजाए किनारे पर पहुंचने की तरकीब सोचो।
ये कौन है चित्रकार है, यह कौन......
बन्द करो बकवास घर से चलते वक्त ही मैंने तुम्हें कहा था कि इसे बाथरूम ले जाओ। तुमने मेरी बात नहीं मानी अब देखो नतीजा।
भूत राजा बाहर आजा, आजा हो आजा...
बन्द करो बकवास, एक तो गाड़ी खराब करके रख दी, ऊपर से मजाक उड़ाती हो।

मोनिका

ले० संगीता

नया धारावाहिक उपन्यास भाग-८

आप पढ़ चुके हैं

मोनिका एक अमीर सेठ की इकलौती और जिद्दी बेटी थी। कालिज में सहेलियों से छेड़छाड़ के बाद जब प्रोफ़ेसर डीन मि० उपाध्याय ने उसे बुलाया तो उसको मोनिका ने कह दिया कि मैं तुम्हें भी देख लूंगी। एक दिन मोनिका ने धोखे से शीला को उपाध्याय के घर बुला भेजा और नलिनी के भाई दलजीत का कैमरा लेकर दोनों का फोटो खींच लिया और दलजीत को जबरदस्ती झूठा लेख और फोटो अखबार में छापने के लिए कहा ताकि उपाध्याय से बदला लिया जा सके लेकिन दलजीत ने उसे साफ मना कर दिया। तब मोनिका ने दलजीत से बदला लेना चाहा उसे तरह-तरह से बदनाम किया, अपने बाप के आगे पैसों की खातिर झुकाना चाहा, घर से बेघर कर दिया। यहाँ तक की प्रोफेसर उपाध्याय को भी जान से मरवा दिया। इतनी मुसीबतों के बाद दलजीत फिर भी नहीं झुका तो एक और नाटक रचा, अपने फैमिली डाक्टर से अपने पिता को यह कहलवा दिया कि मैं दलजीत के बच्चे की माँ बनने वाली हूं। दलजीत की माँ को यह कहा गया कि सीधी तरह वह विवाह कर ले नहीं तो हम घी टेढ़ी उंगली से भी निकालना जानते हैं। दलजीत ने आगे क्या कदम उठाया अब आगे पढ़िये—

वह कैसे दादा ?'

'अरे, यह छोकरा सेठ अग्रवाल की बेटी की आबरू खराब किए ला है...अब वह मां बनने वाली है तो यह शादी से भागता है—अगर अपन उसका थोबड़ा ठीक करके शादी पर रजामंद कर दे तो सेठ अग्रवाल खुश हो जायेगा...हजार दो हजार तो दे ही देगा।'

'गुड आईडिया दादा...खोपड़ी हो तो तुम्हारे जैसी।'

'बस...तो आज अपन इस छोकरे को ही ठीक करेगा—' महमूद दादा बेंच पर जमता हुआ बोला, 'इसको इधर आने दे...आज अपन उसकी गर्दन पकड़ के सेठ अग्रवाल के पास ले जाएगा...जा रे छोकरे...अपने चेले चपाटों को बुला ला।'

दलजीत का पूरा बदन फोड़े की तरह दुःख रहा था···एक-एक जोड़ में पीड़ा थी··· वह कई दिन से भारी बोझ ढो रहा था किन्तु अभी तक उसका शरीर मजदूरी का अभ्यस्त नहीं हुआ था···उसके बदन पर मैली धोती, मैला कुर्ता और कंधे पर मैला अंगोछा था। वह बार-बार अंगोछे से मुंह का पसीना पोंछता हुआ चला आ रहा था। जब वह गली के सामने पहुंचा तो अचानक महमूद उठकर उसके सामने आ गया। दलजीत अंगोछे से पसीना पोंछकर मुस्कराते हुए बोला—

'सलाम···महमूद दादा।'

'अपन को तेरा सलाम नहीं मंगता···।' महमूद आँखें निकालकर गुर्राया।

दलजीत चौंक पड़ा और आश्चर्य से बोला।

'क्या हुआ दादा···मुझसे क्या कोई भूल हो गई ?'

'तू इतना बड़ा भूल किया जिस का कोई उतार नहीं। अगर अपन को तेरी मां बहन का ख्याल न होता तो अपन तुमको इधर ही खलास कर डालता।'

'पर क्या बात है दादा ? मेरा दोष क्या है ?'

'दोष, तुम हमसे पूछे लाहे···अरे दोष पूछो उस छोकरी से जिसके पेट में तुम्हारा पाप पल रहा है।'

दलजीत बुरी तरह चौंक पड़ा और आश्चर्य से बोला—

'यह तुम क्या कह रहे हो दादा···? कौन-सी छोकरी ? कौन-सा पाप ?'

'सेठ अग्रवाल की छोकरी···जो तुम्हारे बच्चे की मां बनने वाली है।'

'सेठ अग्रवाल की छोकरी···!' दलजीत उछल पड़ा, 'और मेरे बच्चे की मां ? दादा, तुमने कोई सपना तो नहीं देख लिया दिन में।'

'सपना तो हम तुमको दिखाएगा··· अगर तुम उनकी लड़की का हाथ नहीं पकड़ेगा।'

'दादा—यह चक्कर क्या है ? साफ साफ बताओ ना···तुम्हें यह सब किसने बताया है ?'

इतने में वहां भीड़ इकट्ठी हो चुकी थी। महमूद दादा ने सीना ठोंककर कहा—

'खुद सेठ अग्रवाल बोले लाहे···अपन उसके प्यादों में से है—आज ही सेठ अग्रवाल इधर आया था।'

'ओहो—' दलजीत मुस्कराया, 'तो बात यहां तक पहुंच गई है।'

'बात-वात कुछ नहीं—बोलो तुमको शादी मंगता या नहीं।'

'दादा ! अगर तुम सचाई जानते होते तो यह न कहते।'

दादा ने एक लंबी-सी गंदी गाली बकी और बोला—

'सचाई गया तेल लाने को···तुम बोलो··· तुमको शादी मंगता या नहीं।'

एकाएक दलजीत भी गम्भीर हो गया और बोला—

'देखो दादा···इस इलाके में तुम्हारा काफी मान है···हम लोग जब से यहां आकर रहे हैं हमने तुम्हें मान ही दिया है···तुमसे कभी कोई गुस्ताखी नहीं की। वैसे भी तुम आयु में हमसे बड़े हो—लेकिन दादा, एक बात याद रखो···मैं भी जहां रहा हूं सिर उठाकर ही रहा हूं सिर झुकाकर नहीं रहा हूं···यह सिर या तो भगवान के सामने झुकता है और या प्यार के सामने।

'ओए···तू अपन को नखरे दिखाए लाहे—अपन आज तेरा सिर ही काट कर फेंक देगा।'

महमूद ने घुमाकर घूंसा दलजीत पर चलाया किन्तु दलजीत ने झट उसका घूंसा हाथ की एक कलाई पर रोककर दूसरे हाथ से उसकी ठोढ़ी पर एक घूंसा जड़ा और दादा लड़खड़ाता हुआ कई कदम पीछे पनवाड़ी की दुकान के तख्ते से जा टकराया।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

भारत कौन सा लड़ाकू जहाज़ खरीदे?

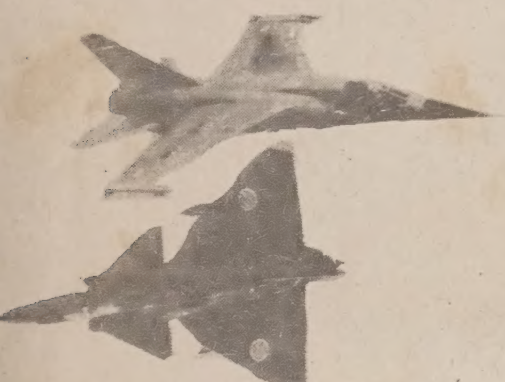
एक भारतीय अध्ययन दल विदेशों में इस बात का अध्ययन कर रहा है कि भारत के लिये कौन-सा जहाज उपयुक्त होगा। भारत को लगभग २०० ऐसे जहाजों की आवश्यकता है जिसका मूल्य २००० करोड़ रुपये बैठता है। तीन प्रकार के लड़ाकू जहाजों में भारत को आकर्षित करने की होड़ लगी है। कई प्रकार के दबाव भी डाले जा रहे हैं। यह तीन जहाज हैं, एंगलो फैंच जेगुआर, स्वीडन का विगन साब और फ्रांस का मिराज-१। इन तीन जहाजों के गुण दोषों पर हमने भी अपने दीवाना एंगल से विचार किया है।

स्वीडिश विगन साब

अगर इसे खरीदने का निर्णय किया जाता है तो हमारे पायलट जो ट्रेनिंग के लिए वहाँ जायेंगे तथा दूसरे सरकारी दल भी वहां मजे करेंगे। स्वीडन में मौज मस्ती मनाने की पूरी छूट है। यही एक ऐसा देश है जहां विवाह का बंधन नहीं है। इस दृष्टि से यह जहाज बहुत उपयुक्त है।

इसमें एक ही दोष है कि स्वीडन ठंडा देश है और हमारा देश गर्म। अतः वहाँ जाने वाले हमारे लोगों को जुकाम हो जायेगा। रुमालों का खर्चा बढ़ जायेगा, गर्म कपड़े भी सिलवाने पड़ेंगे।



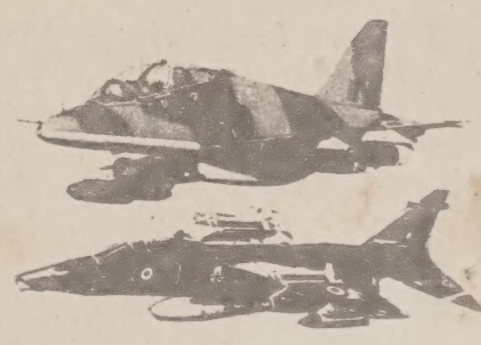


फ्रैंच मराज

हम इस जहाज के पक्ष में नहीं हैं क्योंकि फ्रांस में कैसीनो तथा नाइट क्लब बहुत हैं। अपने पॉयलट तथा डेलीगेशनों के मेम्बर कैसीनों में प्रायः जुये में लुट-पिट जायेंगे, घर से पैसे मंगवायेंगे, हो सकता है जुये की मार पूरी करने के लिये अधिकारी घटिया तथा दोष युक्त जहाज और स्पेयर पार्टस ही कम्पनी वालों से साठ-गांठ कर, ले आयें। अतः इस जहाज के खरीदने में खतरे हैं।

एंग्लो फ्रैंच जेगुआर

इस जहाज में काफी फायदे हैं। इंगलैंड में भारत के लोग काफी हैं। हमारे पायलटों और अधिकारी दलों को अपने रिश्तेदारों (कोई न कोई निकल आयेगा) के यहां डबल रोटी तोड़ने का पूरा मौका मिलेगा। डेलीगेशन के मेम्बरों के रूप में ब्रिटेन बसने के इच्छुक कई भारतीय वहां खिसक सकेंगे।



पृष्ठ 10 से आगे

उधर दादा के चेले चपाटे दलजीत पर टूट पड़े लेकिन दलजीत ने उन्हें लातों और घूसों पर रख लिया। वह लोग इतने होने पर भी दलजीत को हाथ तक न लगा सके। दूसरी और महमूद अपनी ठोड़ी को दबाए दलजीत को देख रहा था...उसके दांतों से लहू निकल आया था। बहुत सारे लोग झगड़ा देखकर चारों ओर इकट्ठे हो गये थे।

लगभग पंद्रह मिनट के अन्दर महमूद दादा के चारों चेले जमीन पर लुढ़क गए। किसी के मुंह से ख़ून बह रहा था, किसी की आंख सूजी हुई थी और किसी का गाल कचौरी हो रहा था लेकिन दलजीत का अंगोछा तक उसके कंधे से नहीं उतरा था...आखिर में जब उस पर आक्रमण करने वाला कोई न रहा तो अंगोछे से हाथ साफ करता हुआ बोला—

'दादा! तुम्हारे दिल में भी अगर हसरत बाकी रह गई हो तो निकाल लो।'

महमूद दादा धीरे-धीरे चलता हुआ दलजीत के पास पहुंचा और उसकी ओर हाथ बढ़ाकर बोला—

'कसम खुदा की...आज बरसों के बाद किसी जवान का हाथ देखा है—लगता है फौलाद ठोढ़ी पर पड़ा हो—अरे, आज से हम तुम भाई-भाई। खुदा की कसम...सेठ अग्रवाल तो क्या अगर रुस्तमे हिन्द भी आ जाए और तुम्हारी ओर आंख उठाकर देख ले तो हम उसकी आंखें निकाल देंगे।'

फिर महमूद ने दलजीत को सीने से लगाकर भींच लिया।

दलजीत खोली में दाखिल हुआ तो मां और नलिनी घबराई हुई थीं—

'भैया...' नलिनी ने घबराकर पूछा, 'तुम्हारे कहीं चोट तो नहीं लगी।'

'दिल्लू...मेरे लाल...तुझे कहीं चोट तो नहीं लगी।' मां ने कहा।

'नहीं मां, कुछ भी नहीं हुआ।' दलजीत मुस्कराकर बोला।

'हे भगवान तेरा लाख-लाख शुक्र है।'

'भैया...' नलिनी ने कहा, तुम इन लोगों के मुंह लगते ही क्यों हो...? बदमाश लोग हैं।'

'अब इनमें से कोई भी बदमाशी नहीं करेगा।' दलजीत ने हंसकर कहा, 'ला...तू जल्दी से मेरे लिए खाना निकाल।'

दलजीत के मुंह हाथ धोते ही नलिनी ने खाना लगा दिया। दलजीत खाने बैठा तो मां ने पूछा—

'लेकिन बेटा...उन लोगों से तेरा झगड़ा हुआ क्यों था?'

'अरे मां...बस यूं ही...वह सेठ अग्रवाल है ना...वह इन्हें जाने क्या-क्या बहका गया है।'

'सेठ अग्रवाल!' मां ने कहा, 'बेटे, वह तो यहां भी आए थे।'

'क्यों आए थे?' दलजीत ने ग्रास रोककर पूछा।

'बेटे...वह...वह मोनिका है ना...'

'वह मेरे बच्चे की मां बनने वाली है—यही कह रहे थे ना?'

'हां बेटे...यही कह रहे थे।'

'और तुमने उनकी बात पर विश्वास कर लिया।'



'बेटे...कोई बाप अपनी बेटी के लिए ऐसी गिरी हुई बात भी कह सकता है?'

'मां—सेठ अग्रवाल अपने मतलब के लिए कितना गिर सकते हैं...यह मैं जानता हूं—तुम नहीं जानतीं।'

'लेकिन भैया' नलिनी ने कहा, 'सेठजी तो कह रहे थे कि मोनिका तुम्हारे लिए रो-रोकर मरी जा रही है। उसने तीन दिन से कुछ नहीं खाया।'

'मेरे लिए...?' दलजीत ने व्यंग से कहा।

'हां भैया तुम्हारे लिए...सेठ जी कह रहे थे कि वह तुमसे बहुत प्यार करती है।'

'मुझसे...और वह प्यार करती है?'

'भैया! सच-सच बताओ। कहीं सच ही तुम लोगों में प्यार होकर झगड़ा तो नहीं हो गया।'

'नलिनी...तू तो सब कुछ जानती है फिर भी पागलों जैसी बातें करती है।'

'मगर बेटे...' मां ने कहा, 'वह तो धमकी देकर गए हैं कि अगर कल शाम तक तू शादी के लिए सहमत न हुआ तो वह तुझे अदालत में घसीट लेंगे।'

'मां...तू भी पागल हो गई है—अरे जिस बात का कोई आधार ही न हो उसके लिए चिन्तित होने का कोई कारण नहीं।'

'लेकिन बेटा...वह मां...।'

'ढोंग होगा सब...या फिर वह किसी और का पाप मेरे सिर थोपने के चक्कर में होगी—मैं भी देख लूंगा कि वह मुझे कौन-सी अदालत में बुलाते हैं।'

दलजीत बिना खाना खाए ही उठ गया।

अदालत में गहरा सन्नाटा था। जज अपनी कुर्सी पर बैठा था एक ओर सेठ अग्रवाल का वकील दूसरी ओर से कोई वकील नहीं था। दलजीत अपराधियों के कटघरे में खड़ा था। अदालत में केवल पांच और व्यक्ति थे। दलजीत की मा, नलिनी, सेठ अग्रवाल, मोनिका और डॉक्टर वर्मा। मोनिका की बड़ी-बड़ी आंखें भीगी हुई थीं लेकिन वह दलजीत से नजरें बचाने का प्रयत्न कर रही थी। सेठ अग्रवाल की प्रार्थना पर

और लोगों को अदालत में आने की अनुमति नहीं दी गई थी।

कुछ देर बाद जज ने दृष्टि उठाकर दलजीत को देखा और बोला—

'अपराधी दलजीत कुमार सक्सेना। आपका कोई वकील सफाई नहीं।'

'जी नहीं'''वकील करने की मेरे पास गुंजाइश नहीं।'

'आप चाहें तो आपके लिए वकील का प्रबन्ध सरकार कर सकती है।'

'जी धन्यवाद'''जिस मुकदमे की कोई बुनियाद न हो उससे मैं अकेला ही निबट सकता हूं।'

फिर जज ने वकील इस्तगासा से कहा। 'मुकदमा पेश हो'''।'

वकील इस्तगासा ने फाईल पर एक गहरी नजर डाली और गाऊन संभालकर उठता हुआ बोला—

'यूअर आनर! यह मुकदमा न तो नया है और न इतना उलझा हुआ कि इसमें अधिक सिर खपाया जाए'''यह रीत जग में बहुत पुरानी है कि भंवरे कलियों का रस चूसते हैं और उड़ जाते हैं'''यह मुकदमा भी कुछ इसी प्रकार की पुरानी परम्परा का है।'

एक लड़का और लड़की दोनों आपस में मिलते हैं'''प्यार मुहब्बत के वचन होते हैं'''लड़का प्यार की सचाई का प्रमाण मांगता है और लड़की अपना सब कुछ न्योछावर कर देती है'''लड़के की कामुकता की प्यास बुझ जाती है और वह हरजाई भंवरे के समान उड़कर किसी और कली को ढूंढ़ने लगता है—ऐसे मामलात में नारी सदा से पुरुष की कामुकता और स्वार्थ का शिकार होती चली आई है इसलिए कि वह पुरुष की अपेक्षा कमजोर और ना-समझ होती है।

मेरी मुव्किकला मिस मोनिका अग्रवाल ने भी कुछ इसी प्रकार का धोखा खाया है'''अग्रवाल कालिज में पढ़ती थी'''जवाहर लाल कालिज में'''अपराधी दलजीत कुमार सक्सेना भी किसी समय इस कालिज में पढ़ता था और वह अपने समय का योग्य विद्यार्थी था। उसको एक प्रोफेसर मिस्टर उपाध्याय अपने बेटे के समान प्यार करते थे। शिक्षा पूरी करके अपराधी अखबार उजाला में एक प्रेस फोटोग्राफर और रिपोर्टर के तौर पर नौकर हो गया लेकिन उसके सम्बन्ध प्रोफेसर उपाध्याय से बने रहे और प्रायः उनके घर आता जाता रहता'''

प्रोफेसर उपाध्याय बड़े प्रसिद्ध और माने हुए शिक्षक थे'''मेरी मुव्किकला मिस मोनिका अग्रवाल भी कभी-कभी उनके यहां जाती रहती थी'''वहीं पर प्रोफेसर उपाध्याय ने अपराधी दलजीत का परिचय मिस मोनिका से कराया और यही परिचय धीरे-धीरे प्यार और घनिष्ठता में परिवर्तित हो गया'''दोनों ने प्यार की कसमें खायीं। साथ निभाने और साथ ही जीने-मरने के वचनों आदान-प्रदान हुआ। एक दिन अपराधी ने मेरी मुव्किकला से उसके प्यार की सचाई का प्रमाण मांगा और मेरी मुव्किकला जो नादान भोली-भाली मासूम लड़की है अपने प्यार की सचाई का प्रमाण देने के लिए अपने स्त्रीत्व का पवित्र मोती अपराधी को सौंप बैठी'''और फिर अपराधी ने एक कामुक भंवरे के समान उसे छोड़ दिया'''

यूअर आनर! केवल इतना ही नहीं''' अपराधी को मेरी मुव्किकला से इतनी घृणा हो गई कि जब मिस मोनिका के पिता श्री अग्रवाल ने अखबार उजाला खरीद लिया तो अपराधी उसी दिन नौकरी छोड़कर चला गया जबकि सेठ अग्रवाल उसको रिपोर्टर से उपसम्पादक बना देना चाहते थे'''फिर सेठ अग्रवाल ने जब वह जमीन खरीद ली जिस पर अपराधी दलजीत की खोली थी तो अपराधी ने इसका विरोध किया'''उसने खोली का मुआविजा लेने से इनकार कर दिया''' सेठ अग्रवाल ने उसे रहने के लिए एक फ्लैट देना चाहा किन्तु उसे भी अस्वीकार कर दिया गया।

मी लार्ड! यह मेरी मुव्किकला के दुःख की कहानी है'''इसका भेद सेठ अग्रवाल पर उस दिन खुला जब मेरी मुव्किकला को मतली हुई'''सेठ अग्रवाल ने डॉक्टर वर्मा को बुलाया जिन्होंने निरीक्षण करने के बाद बताया कि मेरी मुव्किकला मां बनने वाली है?

एकाएक दलजीत ने गुस्से से कहा—

'यह सब झूठ है'''झूठा आरोप लगाया जा रहा है मुझ पर।'

"आर्डर'''आर्डर'''' जज ने मेज पर हथौड़ा मारकर कहा, 'तुम्हें जो कुछ कहना है वह बाद में कहना।'

दलजीत के होंठ हिलते रह गए'''फिर जज ने वकील इस्तीगासा से कहा—

'आप अपना बयान जारी रखिए।'

'मी लार्ड'''अब मैं इस केस में अपना पहला गवाह पेश करना चाहता हूं'''डाक्टर वर्मा''''

थोड़ी देर बाद डॉक्टर वर्मा अदालत में खड़े थे'''शपथ लेने के बाद वकील ने उन से पूछा—

'हां तो डाक्टर वर्मा'''आपने कब डॉक्टरी पास की थी।'

'जी—१९४८ में।'

'तब से आप बराबर प्रैक्टिस कर रहे हैं?'

'जी हां'''रैगूलर प्रैक्टिस कर रहा हूं।'

'आप शहर में किन-किन लोगों के फैमिली डॉक्टर हैं?

'सेठ नरेन्द्र कुमार, सेठ त्रिलोकीनाथ, सेठ रामप्रकाश बजाज, सेठ दयानन्द वर्मा''' और इन जैसे लगभग एक दर्जन सेठों के अलावा सेठ अग्रवाल का भी फैमिली डॉक्टर पिछले बीस-पच्चीस बरसों से मैं ही हूं।'

'नोट किया जाए यूअर आनर'''जो आदमी इतने प्रतिष्ठित आदमियों का फैमिली डॉक्टर हो और स्वयं माना हुआ प्रसिद्ध डॉक्टर हो उसपर किसी प्रकार का सन्देह नहीं किया जा सकता।'

फिर वकील ने डॉक्टर से पूछा—

'तो डॉक्टर जब कल आपको सेठ अग्रवाल का फोन मिला तो आप क्या कर रहे थे?'

'मैं एक रोगी को देख रहा था।'

'सेठ अग्रवाल ने आपसे क्या बताया?'

'यही कि मोनिका की तबीयत खराब है'''उसे बार-बार उबकाईयां आ रही हैं।'

'फिर आपने क्या किया?'

'मैं रोगी को निबटाकर कार में बैठकर सेठ अग्रवाल के घर चला आया।'

'यहां आकर आपने मिस मोनिका का निरीक्षण किया।'

'जी हां—मैंने मिस मोनिका का निरीक्षण किया।'

'और आपने क्या खास बात पाई?'

'यही कि मोनिका मां बनने वाली थी।'

'फिर क्या हुआ?'

'मोनिका ने एकान्त में मुझे सचाई बता दी'''मैंने मोनिका को सांत्वना दी और सेठ अग्रवाल को इस बात की सूचना दी। सेठ साहब इस पर बहुत आग बबूला हुए लेकिन मेरे समझाने-बुझाने पर ठंडे पड़ गए और उन्होंने कहा कि वह स्वयं दलजीत की मां से मिलने जाएंगे।'

शेष पृष्ठ ४० पर



हरे राम, हरे राम, दुनिया में यह क्या गजब हो रिया है। थमारे हुंदेया ऐसी घटना हो रही है ? थमको शरम आनी चाहिए। तुम गाजर और मूली का सूप पी-पी कर सोते रहते हो उधर नरभक्षी चीता गढ़वाल के दोगादा में लोगों की जान पर जान लिये जा रहा है। अब तक पकड़ में नहीं आया। कई शिकारी उसे मारने के लिये गये पर वह सबको चकमा दे रिया है।
Z
क्या बकवास बोल रिया है ? चिता लोगों की जानें ले रही है ? इतनी-सी बात के लियां मेरी मीठी-मीठी नींद खराब कर दी। दिल करता है कि तेरी गर्दन मरोड़ कर बैकोलाइट प्लास्टिक के प्लेट में बिल्ली के आगे डाल दूं। अरे मेरे भाई, चूहे की जान, चिता तो सबकी जान ले लेगी। बड़े-बड़े फन्ने खां तक चिता से नहीं बच सके। कल हमको भी चिता खा जायेगी। सिकन्दर, पौरुस, राम, कृष्ण, अर्जन, नाथूराम गोडसे, डाकू अलवर, नेहरू, गांधी सबके सब चिता में ही तो गए। यह तो कुदरत का नियम है,दुनिया में सबको चिता की भेंट चढ़ना है।
इसका रेडियो गलत मीटर बैंड पर लग गया।
मैं आग वाले चिता की बात नहीं कर रिया हूं। मैं तो उस चीते की बात कर रहा हूं जो थारे जैसे गफलत में सोते आदमियों को पकड़ कर फाड़ कर खा जाता है समझे ?
GRRRR
ऐह !
सचमुच ही याड़ी, यह चूहा ठीक कह रिया है। गढ़वाल के दोगादा में इस नरभक्षी चीते ने हाहाकार मचा रखा है। पिछले दो सालों में वह चालीस-पचास आदमियों की जानें ले चुका है। सरकार ने इनाम भी रखा है। लेकिन अब तक वह किसी शिकारी के हाथ नहीं लगा। बड़ा चालाक है।
यह तो बोत बुरी बात है। हमको आज तक किसी ने बताया भी नहीं न ?



ग्रो भाई, इसमें थारा भी कसूर सै। हमको ग्राजतक बताया क्यों नहीं? थम स्कूल में क्या सीखते हो? ग्रादर्श नागरिक के क्या-क्या कर्त्तव्य हैं यह थमको माइटर ने नहीं बताया?
पहले ही हमको बताया होता तो हम ग्रब तक उस चीते को पकड़ कर मुर्गा बना चुके होते ऐसे।
खैर, कोई बात नही, ग्रब भी कोई जादा देर नहीं हुई है। कुल चालीस-पचास ग्रादमी ही खा गया है ग्रौर जिनको खाया उनमें से कौन से थमारे-हमारे रिश्तेदार थे। ग्रब तू ग्रपने बड़े भाइयों का कमाल देखना।
चाचा जिम कार्पीट जी, हमको माफ करना कि ग्रापके भतीजे फिल कार्पेट ग्रौर बिल कार्पेट के होते हुए भी एक नादान चीता इतना उत्पात मचा गया। ग्रंकल जिम, वी ग्रार रियल्ली वैरी वैरी वैरी सॉरी। हम किसी ग्रौर समस्याग्रों में उलझे रहे। हखबार पढ़ने की हमको फुर्सत ही नहीं मिली।
चाचा जी, थम मरते वक्त ग्रपने हैट, निकर ग्रौर हमारे लिये छोड़ गये थे, हम उनका लाज रखेंगे। उस चीते को मार कर उसकी खाल में नायलोन का भुस भर कर थमारी फोटो के चरणों में लाकर हम डाल देंगे, इट इज ग्रवर प्लैज।
चाचा जी इनको माफ कर दो। यह सच्चे दिल से माफी मांग रहे हैं।
पहली बात तो यह है कि वह चीता मैन ईटर यानि नरभक्षी क्यों बना?
बन गया होगा, उसकी मर्जी है। वह चाहे तो ग्राइ. सी. एस. ग्रौर एम. बी. बी. एस. भी बन सकता था लेकिन मैन ईटर बन गया। जैसे हम जासूस बन गये। दफ्तर में क्लर्क भी तो बन सकते थे।
भाई जी यह बात भी थमने मार्के की ही कही।
भाई जी, इसके नाम में वह रहस्य छिपा है जो ग्राज तक किसी की नजर में नहीं ग्राया होगा। उसको ग्रंग्रेजी में मैन ईटर ग्रौर हिन्दी में नरभक्षी क्यों कहते हैं? वूमन ईटर या नारी भक्षी या मादा भक्षी क्यों नहीं कहते?
सीधी सी बात है वह ग्रादमी-ग्रादमी खाता होगा। तिरिया जात को नहीं खाता होगा।


अगर वह केवल मर्दों को ही खाता है तो हम नारियों का भेष धर कर गढ़वाल जायेंगे और उसका शिकार करेंगे। वह हमको तो नारी समझ कर खायेगा नहीं। निश्चिन्त होकर घात लगा कर उसे मारेंगे।
देखो इतनी छोटी सी बात समझ न आने के कारण कितने लोग अपनी जानें गवा बैठे! अक्ल बोत बड़ी चीज है चीता तो छोटा-सा ही जानवर है अक्ल तो भैंस से भी बड़ी होती है। अपने देश में अक्ल की बहुत कमी है, अंग्रेज ठीक ही कहा करते थे।
सीमेंट की इतनी कमी नहीं है जितनी अक्ल की है।
रायफल कहां है? सबसे जरूरी चीज तो वही है।
रायफल को मोड़-तोड़ कर पिलपिल ने अपने झोले में डाल दिया है। तू फिकर मत कर। कारतूसों का डिब्बा मेरे झोले में है तू बिस्कुट के डिब्बे वगैरह खाने-पीने का सामान भर ले अपने वाले में।
सब रैडी है।
इनके साथ-साथ मुझे भी चुहिया का भेस धारण करना होगा। हे भगवान मैं कैसे आदमियों के साथ आन फंसा। इनके साथ क्या-क्या उल्टी-सीधी बातें करनी पड़ रही हैं।
कभी-कभी मुझे तो सरम आती है।
लड़कियों, याद रखो, तुम गर्ल्स हायर सैकेन्ड्री स्कूल लाजपत नगर की छात्रायें हो। मैं उसी स्कूल की टीचरनी हूं। हम कैम्पिंग करने गढ़वाल जा रहे हैं। कोई भी हमसे पूछे हमें यही बताना है। यही परिचय देकर हम वहां डाक बंगलों और होटलों में भी ठहरेंगे। अपने आपको नारी सुलभ लज्जा और ग्रेस के साथ पेश करना होगा ताकि किसी को भी रत्ती भर भी शक न हो।
सिलबिल-पिलपिल
लोगों को पता लग गया तो चीते को भी पता लग जायेगा। बड़ा शैतान है वह चीता।
बचपन में हम रामलीला में सीता जी की सहेलियों का जो पार्ट करते थे वही कला दिखाने का मौका आ गया है।


यहा से अभी बस नहो जाती लड़कियों। पाच मील दूर तक हमें पैदल चल कर डाक बंगले तक पहुंचना है। कोई कुली-वुली भी नहीं मिलेगा।
मैडम जी, वह जो बस का सरदार कंडक्टर था वह मुझे बौत घूर-घूर कर देख रिया था। मने कई वार तो सरम के मारे अपने आंचल मां मुँह छुपा लिया।
आजकल दुनिया में हया-सरम थोड़े ही रह गई है। लोग पराई बहू-बेटियों को इस तरह घूरने लग जाते हैं कि कुयें में छलांग मारने को जी करता है। अब ऐसे आदमियों से पूछो कि अरे मरदूद, बेहया तेरे अपने घर में मां-बेटियां नहीं हैं। कुछ लोक-लाज भी बची है थमारे दिल मे। दुनिया मे मैं कहती हूँ कहर आने ही वाला है।
जी मैडम!
डाक बंगला दागोवा
नमस्ते मेम साहब, मैं इस डाक बंगले का चौकीदार चानन सिंह हूँ जी। बहुत दिनों के बाद किसी मेम साहब के दर्शन हुए। पहले अंग्रेजों के जमाने मे तो अक्सर मेमें आती रहती थीं आजकल बहुत कम हो गया है। कोठी खुलवा दूं मेम साहब जी?
हां चानन सिंह, दो बढ़िया वाले कमरे खोल दो। हम बोत थक गई हैं, सड़क से यहां तक की पांच मील की चढ़ाई मे दम फूल जाता है। हम तो दिल्ली की रहने वाली हैं। पैदल चलने का हमको वैसे भी अभ्यास नही है। पहाड़ी की चढ़ाई तो और भी कठिन होती है। हम यहा तीन दिन रहेंगी, मेरे साथ यह मेरी स्टूडेंटें हैं। बेचारी बहुत सीधी और भोली-भाली लड़कियां हैं चानन सिंह।
मैं आपको गर्म-गर्म चाय पिलाता हूं मेम साहब, थक जायेगी।
माली कचेड़ू राम, तुम कब आये? मैं तो तुम्हें अभी देख रहा हूं। आज बंगले में मेम साहबें आकर ठहरी हैं। ठहरो मैं ही तुम्हारे पास आकर दो मिनट बैठ कर बातें करता हूं, बीड़ी भी पी लेंगे।
कोई खास बात है क्या चानन सिंह? भई, आओ बैठो।
घोर कलजुग आ गया है कचेड़ू राम, आंखों पर भरोस होता। यह जो शहर की मेम साहबें आकर ठहरी हैं इनके रंग-ढंग अच्छे नहीं हैं। मै तुमसे कह रहा हूं बड़ी वाली मेम ठाट से साहब लोगों की तरह पाइप पी रही है। सुनी ऐसी अचम्भे की बात? और वह जो छोटी वाली मेम है न: शऽऽऽऽ वह तो और भी दो कदम आगे है। मैंने खिड़की से देखा जोर-जोर से बीड़ी के कश ले रही थी। ऐसे जोर के कश हम ले लें तो चक्कर आ जायेंगे कुछ समझा?
हरे राम, हरे राम, भैया क्या कहते हो?
बाकी अगले अंक में

आपके पत्र

हंसी-मजाक का गुलशन सदा बहार रहे
दीवाना जग के लिए एक यादगार रहे
ये मोटू-पतलू औ सिलबिल, ये डायना फेंटम
मेरी दुआ है सदा इनमें, सब में प्यार रहे
वो नैनसुख हों या होवें वो डाक्टर झटका
घसीटाराम का तजुर्बा भी बरकरार रहे
चचा बातूनी हों, या काका हाथरसी होवें
हमारे सबके सवालों का इन्तजार रहे
कुछ इस तरह से महकता रहे हंसी का चमन
हर एक हफ्ते मुझे इसका इन्तजार रहे
मेरी दुआ है कि मिलते रहें यूं ही हम सब
हमारा आपका रिश्ता ये बरकरार रहे
निगार हमने तो गुलशन को ये दुआ दी है
खिजा न आये कभी छाई बस बहार रहे

निगार कैसर—शाहजहाँपुर

आज जब दीवाना का २३ फरवरी से १ मार्च १९७८ का अंक पढ़ा, तो बहुत खुशी हुई उसमें जो तीन हास्य क्षणिकाएं छपी हैं, उनमें पहली क्षणिका अमल कुमार डे ने जो लिखी है, वह क्षणिका उन्होंने यह सोचकर नहीं लिखी कि वह भी एक भारतीय नागरिक हैं मैं यह पढ़ कर बहुत शर्मिन्दा हुआ कि डे साहब ने शायद यह क्षणिका अपने पर ही ढाल कर लिखी है. जहाँ तक मेरा विश्वास है कि प्रत्येक भारतवासी बदतमीज, आवारा, गंवार नहीं हो सकता।

मोहन, श्याम, प्रेम—सूरतगढ़

जब से मैंने पत्रिका का पठन प्रारम्भ किया, उसी समय से मैं पत्रिका का शुभाकांक्षी हूं। पत्रिका का प्रत्येक अंक अवर्णनीय, शोभनीय, रुचिकर एवं हर्षवर्धनीय होता है।

यदि स्वतन्त्रता संग्राम की साम्राज्ञी लक्ष्मीबाई हैं तो समस्त पत्रिकाओं में हास्य सम्राट है दीवाना तेज साप्ताहिक।

दीवाना का नया अंक प्राप्त हुआ। चिल्ली की गधा सवारी देखते ही मन हर्ष-विभोर हो गया। चट खरीदा पट पढ़ा। फिल्मी वर्णमाला श्रेयस्कर थी। काश ऐसा हो कि प्रथम कक्ष के बच्चों को यही वर्णमाला पढ़ाई जाये जिससे दो फायदे होंगे, अर्थात एक पंथ दो काज। प्रथम तो यह शीघ्र याद होगा एवं बच्चे फिल्मों के बारे में भी जान जायेंगे।

चाचा बातूनी की कलम बहुत रुचिकर उत्तर लिखती है। काका के कारतूस तो हम पाठकों के दिल पर हमला कर, हम पाठकों के मन को हर्ष विभोर कर देते हैं। पंचतंत्र उचित, शिक्षाप्रद, मदहोश मदहोशी लिए हुए सदैव हो उपस्थित होते हैं। बस अब व्यग्रमन को शांत किये हुए आगामी अंक की प्रतीक्षा कर रहा हूं।

शशिकांत माथुर—जबलपुर

चिल्ली लीला २१५, १६ मार्च नजरों से गुजरा पृष्ठ दो पर 'आबची खावचा यंत्र' में थोड़ी कमी रह गई। भला हम आलसी लोगों के लिए यह यन्त्र कैसे काम देगा? इस यंत्र द्वारा केवल मुंह चलाने का इन्तजाम है। खाना हमें हाथ से उठाकर मुंह में रखना पड़ेगा। यंत्र चलाने के लिए पैरों को हरकत करनी पड़ेगी औ पलंग से उठकर कुर्सी पर बैठना पड़ेगा, बाद में मुंह धोना पड़ेगा। ऐसी सूरत में भला बताइये कितना मुश्किल काम है जब डाकिया हमें 'दीवाना' घर में आकर पलंग पर दे जाता है और हम लेटे-लेटे पढ़ते हैं। आप अपने यंत्र में तुरन्त संशोधन कीजिये कीमत मुंह मांगी मिलेगी।

रेशमा काफी वाला—इन्दौर

दीवाना का अंक १० प्राप्त हुआ। मुखपृष्ठ देखकर बेहद खुशी हुई। क्योंकि चिल्ली साहब १ रुपये में गाना सुना रहे थे काका के कारतूस, आपस की बातें, दीवाने सुझाव, फेंटम, पिलपिल-सिलबिल, सवाल यह है इतने अच्छे लगते हैं कि सच में मैं तो दीवाना का दीवाना हो गया हूं। और चिल्ली लीला का नया आविष्कार भी अच्छा लगा। मैं कम से कम ढाई साल से दीवाना पढ़ रहा हूं। क्या एक वर्ष के लिए मैं आपसे दीवाना मंगवा सकता हूं और मुझे कितने रुपये मनीआर्डर के द्वारा किस पते पर भेजना है विस्तारपूर्वक बताइये।

किशोर माटा—रिवाड़ी

वार्षिक चन्दे के लिए ४८ रु० मनीआर्डर से सम्पादक, दीवाना तेज साप्ताहिक ८-ब, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-२ के पते पर भेज दीजिये। —सं०

आज ही दीवाना का ताजा अंक काफी इन्तजार के बाद प्राप्त हुआ जिसे पाकर मैं इस तरह खुश हुआ जैसे अन्धा दो आंख पाकर खुश होता है. इस अंक की सारी सामग्री बेहद ही रोचक और मजेदार थी। वर्ल्ड चैम्पीयन हास्य सम्राट चिल्ली के आकर्षक फोटो से सुशोभित मुखपृष्ठ भी बेहद ही आकर्षक लगा। इस अंक में विशेष 'फिल्मी वर्णमाला ज्ञान', 'सवाल यह है?', 'छुट्टन मंत्री बना' तथा मोटू-पतलू के भाग्य का चक्कर बेहद ही रोमांटिक लगे।

नया धारावाहिक उपन्यास 'मोनिका' बेहद ही रोचक है कृपया इसे ज्यादा पृष्ठों पर दिया करें, आप से बस एक शिकायत है कि दीवाना हमारे फारबिसगंज में काफी लेट पहुंचता है। कृपया हमारी प्रिय पत्रिका को हमारे शहर में जल्दी भेजा करें। इस अंक के लिए सारे दीवाना परिवार को हमारी शुभकामनाएं।

श्याम माहेश्वरी—फारबिसगंज

आज रेलवे बुकस्टाल पर अपने चिल्ली को गर्मी से बचते व संगीत सुनते देख, झट से मैंने एक रुपया थमाया और नया अंक अपने हाथों में ले लिया। इस अंक में फिल्म पैरोडी 'अपना पान' व दीवाना कार्ड पाकर दिल गार्डन-गार्डन हो गया।

इसके साथ ही चिल्ली लीला, पिलपिल-सिलबिल, काका के कारतूस, समस्याओं का दीवाना हल, कुछ दीवाने सुझाव, पंचतंत्र, फिल्मी दृश्य व सचिन का परिचय बहुत ही मजेदार लगे। हां परोपकारी, मदहोश न पाकर खेद हुआ।

कृपया अमिताभ बच्चन व देव आनन्द पर लेख प्रकाशित करें क्योंकि मेरे मित्र इसकी काफी दिनों से प्रतीक्षा कर रहे हैं।

रमेशचन्द्र, बिजेन्द्र—कन्नौली

मैं दीवाना का बहुत पुराना प्रेमी हूं। वैसे मैं कई पत्रिकायें पढ़ता हूं मगर हास्यरस की दुनिया में दीवाना एक अलग ही स्थान रखती है, दीवाना पंचतंत्र. एक शिक्षा प्रद स्तम्भ है(खेल-खेल में, ज्ञानवर्धक और क्यों और कैसे एक सेहत के लिए टानिक है, छुट्टन मिट्ठन, सिलबिल-पिलपिल, काका के कारतूस, आदि हृदयस्पर्शी होते हैं।

दीवाना इक शमा है हम सब हैं परवाने।
बलबिन्दर, निर्मल, निगार, सब ही हैं दीवाने।।

बलविन्दर सिंह—शाहजहाँपुर



खेल खेल में





कौन कितना तेज

आजकल अधिकतर क्रिकेट में तेज बॉलरों के बॉल की गति मापने का रिवाज चल पड़ा है। आज हम आपको यही बताते हैं कि खेलों में कौन कितनी गति का है।

हाल में ही भारतीय बल्लेबाजों को थामसन की तूफानी गेंदों का सामना करना पड़ा था हालांकि समझा जाता है कि वे पहले जितना तेज नहीं रहे। वेस्ट इण्डीज के विरुद्ध उन्होंने कुछ वर्ष पूर्व तथा इग्लेंड के विरुद्ध कई गेंद सौ मील प्रति घण्टे की रफ्तार वाली फेंकी थीं।

औसतन थामसन की गति ८० मील प्रति घण्टा मापी गयी है। लिली जो ७१.७ मील प्रति घण्टा की रफ्तार से गेंदें फेंकते हैं थामसन से भी अधिक खतरनाक साबित होते हैं (विकटें झाड़ने में)। सोचिए अगर लिली भी आस्ट्रेलियाई टीम में होता तो हमारे बल्लेबाजों की क्या दशा होती। पुराने जमाने में भारत के पास भी तेज गेंदबाज थे मोहम्मद निसार—उनकी कई गेंदे थामसन की ही गति के बराबर की होती थीं। परन्तु तुर्रा यह था कि उस समय आस्ट्रेलिया के पास बहुत ही तेज गेंदबाज लारवुड के रूप में था जिसके सम्मुख निस्सार फीके पड़ गये। लारवुड ६३ मील प्रति घंटे की रफ्तार की गेंदों से बैटसमैनों के होश और विकेट उड़ा देते थे। वेस्ट इंडीज के वेम हाल ९० मील की गति की गेंदें फेंकते थे। एक बार डॉन बैडमैन का बल्ला लारवुड की गेंद को छू गया तो गेंद १२० मील की गति से उड़ चली—

टैनिस में जिम कार्नस की सर्विस भी १२० मील की गति से गेंद को फेंकती है। अमरीका के ही रोस्को टैनर की सर्विस की गति तो १४० मील मापी गयी। इसी खेल के बिलटैल्डन १५० मील की गति को छूने में कामयाब होते हैं।

तेजी के मामले में गोल्फ वाले सबसे आगे हैं। गोल्फ के खिलाड़ियों की हिटें बॉल को १८० मील प्रति घंटे की रफ्तार पर पहुंचाने में सफल मानी जाती हैं।

फुटबाल के खेल में पेले के बारे में कहा जाता है कि वह ७५ मील की गति से बॉल को गोल में दाग देते थे।

आइस हॉकी तेज गति का खेल है। इसमें पक प्रायः ८८ मील की गति से सफर करता है और खिलाड़ी की गति ३० मील के आसपास होती है।

बॉक्सिंग वाले भी गति में पीछे नहीं हैं। जोलुई का मुक्का विरोधी को १२७ मील प्रति घंटे की रफ्तार से जड़ता था। जैक डिम्पसे १३५ मील की गति का मुक्का मारता था मुहम्मद अली और स्पिंकस उनसे तेज होने का दावा कर सकते हैं—

गति के मामले में हॉकी भी कम नहीं—पेनल्टी कार्नर की हिटें सौ मील से अधिक की रफ्तार पर जाती हैं। विशेषज्ञों का मत है कि हाल में भारत-पाक टैस्ट मैच (हॉकी) में बंगलौर में शाहनाज ने जो गोल किया वह १२० मील की गति से गया होगा।

हम अपने भारत के खिलाड़ियों के बारे में गतियों का विश्वसनीय ब्यौरा नहीं दे सकते चूंकि हमारे पास वह इलैक्ट्रॉनिक उपकरण नहीं है। आशा है कि शीघ्र ही भारत के पास भी ऐसा उपकरण होगा, फिर हम आपको बतायेंगे कि कौन कितना तेज है।

संजीव जलवानी—बंबई

प्र० : क्रिकेट की स्थापना किस देश ने की और कब ?

उ० : इंगलैंड ने।

दीपक आहुजा—बंबई

प्र० : आस्ट्रेलिया के दौरे के बाद भारतीय क्रिकेट टीम किस देश का दौरा करेगी और कब ?

उ० : वेस्टइंडीज की टीम इस वर्ष के अंत में भारत आयेगी। इस वर्ष हमारी टीम और कहीं नहीं जायेगी।

प्र० : गैरी सोबरस ने किसकी गेंदबाजी में छः छक्के लगाये और वो गेंदबाज किस देश का था।

उ० : इगलैंड के एम नैश के ओवर में।

जाहिद अहमद—कानपुर

प्र० : तेज बैटिंग करने में इनको क्रम दीजिये। लायड नाट, रिर्चड, माजिद, पटेल वसीम राजा, ओल्ड ?

उ० : लायड, रिर्चड, माजिद, नॉट, वसीम राजा, ओल्ड व पटेल ?

मुमताज अहमद—सालाराम

प्र० : भारत में फुटबाल की सबसे अच्छी टीम कौन-सी है ?

उ० : कलकत्ता की मोहन बगान टीम।

खेल-खेल में
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

बास्केटबाल कैसे खेलें

अंक और अतिरिक्त समय

द्वितीय अर्द्ध की समाप्ति पर यदि अंकों की संख्या समान हो तो खेल अतिरिक्त ५ मिनट के लिए या ऐसे ५-५ मिनट की अवधि के लिए चालू रखा जाएगा, जब तक अंकों की संख्या का समान होना समाप्त न हो जाए। प्रथम अतिरिक्त समय के पूर्व टीमें बास्केट के लिए टास करेंगी और प्रत्येक अतिरिक्त समय पर बास्केट के लिए क्षेत्रों की अदला-बदली करेंगी। प्रत्येक अतिरिक्त समय के बीच दो मिनट का समय दिया जावेगा। प्रत्येक अतिरिक्त समय के आरम्भ पर गेंद का खेलना केन्द्र से चालू किया जावेगा।

खेल का समाप्त होना

समय-गणक के इस संकेत पर कि खेल की अविध समाप्त हो चुकी है, खेल समाप्त माना जावेगा।

जब समय-गणक के संकेत के साथ-साथ या उसके ठीक पूर्व फाउल हो जाय (अर्द्ध-समय या अतिरिक्त समय की समाप्ति भी इसमें शामिल है) तो मुक्त-क्षेप के लिए समय दिया जायेगा।

समय सम्बन्धी नियम

खेल-घड़ी का चालू होना

अर्द्ध समय या अतिरिक्त समय के आरम्भ में गेंद को उछालने से उसके अधिकतम ऊँचाई पर पहुंचने पर जब वह किसी खिलाड़ी द्वारा टपाई जाती है, उस समय खेल-घड़ी चालू की जायेगी।

प्रत्येक खेल की अवधि की समाप्ति के समय पर खेल घड़ी बन्द कर दी जायेगी।

गेंद का पुनः खेलना चालू होना

गेंद का खेलना पुनः चालू हो जाता है, जब—

(क) अपनी अधिकतम ऊँचाई पर पहुंचने के बाद गेंद किसी खिलाड़ी द्वारा टपाई जाये; या

(ख) जब अधिकारी मुक्तक्षेप के लिए खिलाड़ी को गेंद सौंपे या

(ग) जब मुक्तक्षेप द्वारा गेंद कोर्ट में खड़े खिलाड़ी को स्पर्श करे।

गेंद का खेलना बन्द होना

गेंद का खेलना बन्द हो जाता है, जब—

(क) गोल हो जाये,

(ख) प्रशिक्षक या स्थानापन्न खिलाड़ी द्वारा तकनीकी फाउल के लिए मुक्तक्षेप दिया जाये या एक मुक्तक्षेप के बाद दूसरा मुक्तक्षेप हो,

(ग) गेंद बास्केट के आधारों पर अटक जाये।

(घ) अधिकारी की सीटी बजे जब कि खेल चालू हो।

(ङ) मध्यावकाश या अतिरिक्त समय के लिए समय समाप्त हो जावे।

(च) फाउल हो जाये जब कि खेल चालू हो।

(छ) नियमों का उल्लंघन हुआ हो या बास्केट सम्बन्धी बाधा हुई हो या मुक्त-क्षेप करने वाली टीम की ओर से मुक्तक्षेप सम्बन्धी नियम का उल्लंघन हुआ हो।

अपवाद—गेंद का खेलना गोल के समय बन्द नहीं होता। यदि गोल हो गया है तो माना जायेगा यदि—

(१) मुक्तक्षेप की गेंद उड़ान पर हो या मैदान से गोल के लिए प्रयास करने पर गेंद उड़ान पर हो, उस समय (उपधारा) (घ) (च) या (छ) घटे, या

(२) विपक्षी फाउल करता है, जब कि गेंद खिलाड़ी के अधिकार में हो, जो गोल के लिए प्रयास कर रहा हो, जो निरतर गति द्वारा अपने प्रयास को समाप्त करता हो और जो फाउल होने से पूर्व आरम्भ हो गया हो; या

(३) जम्प बॉल सम्बन्धी नियम के उल्लंघन की उपेक्षा कर दी गई हो।

टाइम-आउट

टाइम-आउट उस समय होता है और खेल-घड़ी बन्द कर दी जाती है, जब अधिकारी—

(क) फाउल

(ख) जम्प बॉल

(ग) रुके खेल को पुनः चालू करने में असाधारण देरी।

(घ) चोट के कारण खेल को रोकने

(ङ) अन्य किसी कारणवश खेल बन्द करने के लिए संकेत दे।

(च) द्वितीय अर्द्ध-समय के अन्तिम पाँच मिनट में तथा समस्त अतिरिक्त समय में जब-जब अधिकारी सीटी बजाये, प्रत्येक समय खेल-घड़ी बन्द हो जायेगी।

चार्ज किया गया टाइम-आउट

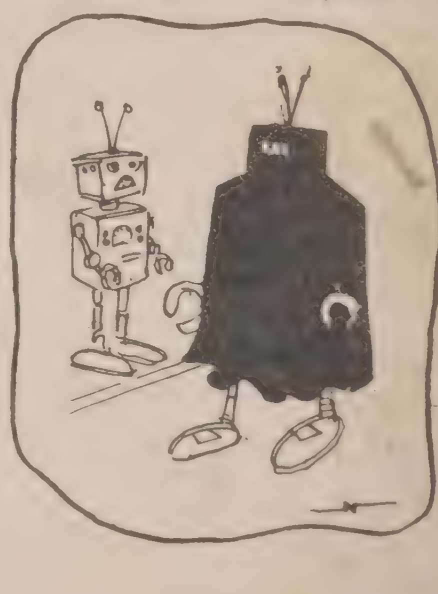
प्रशिक्षक को टाइम-आउट के लिए निवेदन करने का अधिकार है। वह स्वयं अंक गणक के पास जाकर तथा प्रचलित उचित संकेत द्वारा टाइम-आउट की माँग करेगा। बिना अपने स्थान से हिले विद्युत संयंत्र द्वारा भी प्रशिक्षक टाइम-आउट के लिए निवेदन कर सकता है। खिलाड़ी की अदला-बदली के लिए किसी भी दशा में ऐसे संयंत्रों का प्रयोग नहीं किया जा सकता।

ज्योंही गेंद का खेलना रुके और खेल घड़ी बन्द कर दी जाय, त्योंही अंक-गणक अधिकारी को इंगित करेगा कि टाइम-आउट माँगा गया है।

टाइम-आउट के लिए उपयोग किया गया प्रत्येक मिनट उस टीम के नाम लिखा जावेगा, किन्तु यदि दोनों टीमें चार्ज किए गए टाइम आउट के पूर्व या बाद में खेलने को तैयार हो तो रैफ्री को तुरन्त खेल चालू करने का अधिकार है।

खेल-अवधि के प्रत्येक अर्द्ध-समय में प्रत्येक टीम को दो बार टाइम-आउट दिया जावेगा और प्रत्येक अतिरिक्त समय में एक बार टाइम-आउट दिया जावेगा। जिन टाइम-आउट का उपयोग नहीं किया गया है, उन टाइम-आउट को दूसरे अर्द्ध-समय में अतिरिक्त समय के लिए बकाया नहीं माना जायेगा।

क्रमशः

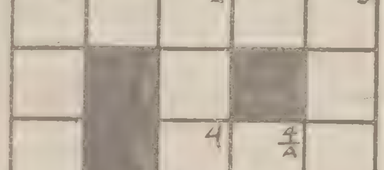



फैण्टम और डियाना की नौकरी
क्या तुम शादी करोगे ?
डियाना के साथ ?..
बिल्कुल ठीक कहा है !
बूढ़े मौज, तुमने यह बात सुनी ?
यह लिखा हुआ है ···फैंटम शादी करेगा और अपने वंश को आगे बढ़ायेगा ।
कितना अच्छा लगा जब शादी की बात सुनी ।
कब करोगे ?
जैसे ही उसकी नौकरी स्थाई हो जायेगी कोई भी दिन तय कर लेंगे···
मेज-कुर्सी पर बैठकर यह बेकार के विवरण पढ़-पढ़ कर मैं तो ऊब गई हूं पता नहीं कब उसके पास जाऊंगी ।
मैं बहुत ऊब गई हूं···
बेकार के विवरण ···यह सब उप-निदेशक करता है ।
डा० हैनरी, कृपया मुझे नये मिशन पर बाहर भेज दो ।
असम्भव··· बहुत खतरनाक···वहाँ का शासक दैत्य के समान है···
मैं इससे पहले दैत्य (हिज) से मिल चुकी हूं ।
स्वेन, डियाना तुम्हारे साथ ताराकीमो जाना चाहती है ।
क्षमा करना आप नहीं जा सकतीं । अशिष्ट देश में औरत का जाना खतरनाक सिद्ध हो सकता है ।
तो क्या वहां आदमी का जाना ठीक है ?
DIRECTOR
अगर मैं साबित कर दूं कि आदमी से ज्यादा मैं अपनी देखभाल कर सकती हूं
कैसे साबित करोगी ?
स्वेन मेरे साथ आओ
?
डियाना, यह क्या मजाक है ?
क्यों ? मैं यह साबित कर सकती हूं कि मैं अपनी हिफाजत खुद कर सकती हूं ।
और तुम प्रथम श्रेणी के ब्लैक बेल्ट जूडो के खिलाड़ी हो ।
लेकिन मैं तुम्हें चोट नहीं पहुंचाना चाहता । ···ओह ?
मैं तुम्हें यह बताना तो भूल ही गई कि मैं भी द्वितीय श्रेणी ब्लैक बेल्ट जूडो की खिलाडी हूं ।
!!
धडाम ।



दीवाना वर्ग पहेली २० रु० इनाम जीतिये

ग्रंतिम तिथि 13 मई 1978



ऊपर से नीचे

१. खूनी जो बीना में मित्र बनता है। (४)

२. नक्सलवादियों का धार्मिक त्योहार? (३)

३. गाड़ी पर बैठ छोल खाने वाला निर्माता? (५)

४ ए. दलबन्दी से सम्बन्धित संक्षिप्त वर्णन वाली पुस्तक। (३)

६. यह जब हो जाती है तो ठिकाना नहीं रहता। (२)

बायें से दायें

१. निर्दयी से बेर छीनकर फेंक दो ग्रौर यात्रा पर निकल पड़ो तो वह साथ देगा। (५)

४. तिनके के सिरे में ग्राधा गुनगुना मिला कर ट्रेवल बनाइये। (३)

५. सावन के उल्टे रंग का मार्ग। (२)

७. पुराना सिक्का जो जवाब जैसा होता है। (२)

८. घर के साथ गाड़ी खड़ी रखने की जरूरत। (४)

एक ग्रनोखी प्रतियोगिता

हम नीचे एक प्रश्न दे रहे हैं ग्रापको उसके दस कारण बताने हैं। प्रत्येक कारण केवल एक लाइन में हो।

प्र० : पुरुषों को लम्बे बाल क्यों बढ़ाने चाहियें ?

सर्वश्रेष्ठ कारणों पर ५ रु० पुरस्कार

ग्रन्तिम तिथि— 13 मई 1978

पत्र प्रतियोगिता

ग्राप खुदा को एक पत्र लिखिये। पत्र ग्रधिक से ग्रधिक २० लाइनों में हो। उसमें ग्राप खुदा से कोई शिकायत कीजिए। ग्राप को ग्रपनी जिन्दगी, समाज, स्कूल-कालिज, देश व दुनिया किसी भी विषय पर शिकायत करने की छूट है। ग्रन्तिम लाइनों में यह भी बताइये कि ग्राप क्या चाहते हैं। सर्वश्रेष्ठ पत्र को उचित पुरस्कार।

ग्रन्तिम तिथि – 13 मई 1978

क्यों और कैसे

प्र० : कुछ लोग बायें हाथ से काम करने वाले क्यों होते हैं ?

उ० : बहुत से वामहस्यिक बच्चों के माता-पिता चिन्तित रहते हैं तथा बच्चों की बायां हाथ प्रयोग करने की आदत को छुड़ाने का भी काफी प्रयत्न करते हैं। परन्तु विशेषज्ञों के अनुसार वामहस्तिक होने में चिन्ता की कोई बात नहीं है। यदि कोई बच्चा अथवा बड़ा बायें हाथ से सब कार्य कुशलतापूर्वक कर लेता है, तो इसमें तनिक भी अड़चन नहीं डालनी चाहिए।

सारे संसार की कुल जनसंख्या का चार प्रतिशत लोग वामहस्तिक हैं। इतिहास में विदित है कि संसार के अनेक प्रतिभाशाली व्यक्ति वामहस्तिक थे। ये ठीक है कि हम दायें हाथ के समाज में रहते हैं इसलिये अधिकतर वस्तुएं, दायें हाथ का प्रयोग ध्यान में रखकर ही बनाई जाती हैं जैसे दरवाजों के नोब, ताले, पेचकस, मोटर गाड़ियां, गाने बजाने के यन्त्र, यहां तक की कपड़ों में लगे बटन भी दायें हाथ के प्रयोग की सुविधा पर ही निर्मित हैं। इसके कारण वामहस्तिक लोगों को थोड़ी कठिनाई अनुभव होती है, पर अधिकतर ये लोग काफी अच्छी तरह सब काम कर लेते हैं।

अधिक लोगों के दायां हाथ प्रयोग करने के बारे में कोई विशेष सफाई नहीं दी जाती। हां एक सिद्धांत है जिसके अनुसार शरीर के दायें तथा बांये भाग एक समान नहीं है तथा दायां भाग बायें से काफी फर्क है जैसे चेहरे के दायें तथा बायें हिस्से में फर्क है तथा बायें तथा दायें पैर की ताकत में अन्तर है यहां तक की पैरों के नाप में भी बहुत थोड़ा सा फर्क होता है। यही असमानता शरीर के हर भाग में है।

और ये भी भली भांति विदित है कि दिमाग भी दो भागों में बंटा है, दायां भाग तथा बायां भाग। दिमाग के दायें भाग से शरीर के बायें भाग का तथा बायें भाग से शरीर के दायें भाग का संचालन होता है। क्योंकि शरीर का दायां भाग दिमाग के बायें भाग से संचालित है इसलिये ये भाग अधिक क्षमता रखता है। दिमाग के बायें भाग से ही हम पढ़ते, लिखते, बोलते तथा कार्य करते हैं। और संसार में अधिक लोगों के दायां हाथ अधिक प्रयोग करने का भी यही कारण है। परन्तु बायां हाथ प्रयोग करने वालों में ये विपरीत होता है तथा इसलिए इन लोगों के शरीर का बायां हिस्सा अधिक क्षमता रखता है।

प्र० : क्या विद्युत मछली 'इलैक्ट्रिक-फिश' बिजली का झटका दे सकती है ?

महेश नाथ, इन्दौर

उ० : आमतौर से संसार के ट्रापिकल तथा सैमीट्रापिकल भागों में विद्युत मछलियां पाई जाती हैं। ये मछली महासागर, सागर, साफ पानी की झीलों से लेकर नदियों तक में होती हैं। संसार के उत्तरी भागों में भी कभी-कभी इनकी कई किस्म मिलती देखी गई हैं।

बड़ी ईल मछली अपने शरीर से ६०० वोल्ट तक का विद्युत करंट प्रवाहित करने में समर्थ है। ये मनुष्य को काफ़ी जोर का झटका दे देती है। फिर भी ये झटके किसी स्वस्थ मनुष्य की जान नहीं ले पाते।

ऐसी ही एक मछली इलेक्ट्रिक कैटफिश उष्णकटिबन्धी अफरीका में भी पाई जाती है। ये शत्रु से बचाव के लिये अपने शरीर के विद्युत प्रवाह का प्रयोग करती है। साथ ही ये लहरों की गूंज ग्रहण करने में भी इसे प्रयोग करती है।

मछली पालने वाले एक्वेरियम में भी कई प्रकार की विद्युत मछलियां पाली जाती हैं इनमें अफरीका की एलीफेन्ट फिश' तथा दक्षिणी अमरीका की नाइफ फिश विशेष उल्लेखनीय है। एक्वेरियम में इन मछलियों के विद्युत प्रवाह को प्रदर्शित करने के लिए खास इन्तजाम किया जाता है। ढाई सौ से अधिक किस्म की विद्युत मछलियां पाली नहीं जा सकती। इनका अध्ययन इनके रहने के स्थानों पर ही जाना जाता है। इनकी खोज से पता चलता है कि इन मछलियों के शरीर के विशेष भाग में ही विद्युत सैल होते हैं। ये विद्युत सैल मछली की ऊपरी त्वचा के नीचे स्थित होते हैं। करंट प्रवाहित करने वाला अंग कुछ मक्खी के छत्ते के समान होता है। इसके छेदों में जैली के समान तत्व होता है जो मछली के दिमाग से आने वाली नसों को ढकता है।

आने वाले वर्षो में इस विषय की ओर अधिक जानकारी प्राप्त होने की आशा है।

प्र० : हम अपनी पलकें क्यों झपकते हैं ?

आंखों की पलकें जो कि आंखों के झपकने पर ऊपर नीचे होती रहती हैं, हमारी आंखों को साफ करने वाला अंदरुनी वाइपर हैं। पलकें खाल की तह से बनी होती हैं, तथा इनको उठाने और गिराने का काम विशेष मांसपेशियां करती हैं पलकें उठती और गिरती इतनी जल्दी हैं कि इस क्रिया के बीच, हमारे देखने में कोई बाधा नहीं पड़ती। पलकों में विचित्र बात ये है कि ये मोटर के चलते हुए वाइपर के समान ही स्वचालित होती हैं। हम हर छः सैकेन्ड में एक बार अपनी पलकें झपकते हैं, इसका अर्थ है कि जीवनकाल में हम अपनी पलकें लगभग दो अरब पचास करोड़ बार झपकते हैं।

पलकों तथा बरौनियों का मुख्य कार्य आंखों की रक्षा है। मुड़े छोटे-छोटे बाल जो पलकों के सिरों पर होते हैं बरौनियां कहलाते हैं, ये धूल मिट्टी अथवा किसी भी बाहरी तत्व को आंखों में जाने से रोकते हैं। जैसा कि आप जानते हैं आंधी तथा बारिश में जाते समय पलकें स्वयं ही बन्द हो जाती हैं तथा ये बाल, धूल तथा पानी को आंखों में नहीं घुसने देते। इसी तरह भौहों के बाल भी पानी तथा पसीने को एक ओर को ले जाकर आंखों की रक्षा करते हैं।

परन्तु पलक झपकने का एक महत्वपूर्ण कार्य है आंखों को तर रखना तथा उन्हें चिकनाना। पलकों के किनारे के साथ-साथ बीस से तीस मुबॉम्बियस ग्रन्थियां होती हैं, इनके मुंह पलकों के बालों के बीच होते हैं। हर बार पलक झपकने पर इन ग्रन्थियों से एक द्रव निकलता है जो पलकों के किनारों तथा बरौनियों को तर करता रहता है ताकि ये सूखने न पायें। दोनों आंखों में एक-एक अश्रु ग्रन्थि होती है, जहां आंसू एकत्रित रखे जाते हैं। पलक झपकने पर इस ग्रन्थि का थोड़ा सा पानी बाहर आकर आंख को तर करता है। यों भी कहा जा सकता है कि पलक झपकने पर हम हर बार रोते हैं।

क्यों और कैसे?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

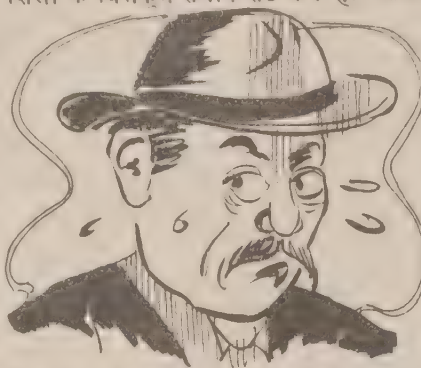
एक लघु कथा

सरकारी दिमाग

—आजाद रामपुरी

समस्या का समाधान अत्यधिक खर्चीला था। समस्या यह थी कि लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों ने एक सड़क बनाने का जो सर्वे किया था उसी के अनुसार जब सड़क बन कर तैयार होने लगी तो उसके आगे एक पत्थर-शिला जो दस फुट चौड़ी बीस फुट लम्बी और सात फुट मोटी थी, आगई थी। वरिष्ठ इंजीनियर ने अत्यधिक माथा-पच्ची करने के बाद पत्थर-शिला को समाप्त करने की जो रूप रेखा बनाकर प्रस्तुत की वह लगभग दस हजार रुपये की थी। पत्थर-शिला के स्थान पर जब वरिष्ठ इंजीनियर खर्चे को कम करने के कुछ अन्य तरीकों पर अपने सहायकों से गहन-विचार-विमर्श में तल्लीन थे तो उसी समय कुछ आमदनी होने की ललक से फटे हाल एक देहाती मजदूर भागता-भागता आया और उसने उस पत्थर शिला को केवल पचास रुपये में समाप्त करने का वायदा किया। इंजीनियर साहब ने प्रसन्न होकर उसे पचास रुपये की तो कौन कहे सौ रुपया देना सहर्ष स्वीकार कर लिया।

रात्रि के समय देहाती मजदूर अन्य अपने पाँच मजदूर साथियों को संग ले, हाथ की लालटैन के प्रकाश की झिलमिलाहट में शिला के बिलकुल समीप सट कर ही शिला



के अनुरुप ही खंदक (गड्डा) खोदने में लग गया। दो घण्टे की लगातार खुदाई के फल-स्वरूप खंदक शीघ्र ही तैयार हो गई। तैयार खंदक में उन छः लोगों ने पत्थर-शिला को एक झटके से ऐसा धकेला कि शिला उसमें एकदम सपाट जम गई! ऊपर से उन लोगों ने मिट्टी को ऐसा बिछा दिया कि मानों उस स्थान पर कुछ हुआ ही नहीं। प्रातः होने पर शिला को गायब देखकर इंजीनियर साहब बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने उस मजदूर को खुशी-खुशी सौ रुपये का भुगतान कर दिया और इधर स्वयं ने खर्च विवरण प्रस्तुत कर शासन से दस हजार रुपये हड़प लिये। कुछ समय बाद जब आडिट विभाग के अधिकारियों ने उस सड़क-निर्माण के खर्च का आडिट किया तो यह आपत्ति निकाली कि यह तो माना कि शिला को समाप्त कराने में दस हजार का व्यय आया किन्तु बारुद से उसके जो टुकड़े हुये वह कहाँ गये? बिक गये या नीलाम हुये या यों ही तहस-नहस हो गये? बेचारे इंजीनियर साहब इस आपत्ति से इतने घबराये कि वे आडिट-अधिकारियों को साथ ले दौड़-दौड़ उस देहाती मजदूर के पास पहुँचे और उसे कई लोभ-लालच देकर उस शिला के टुकड़े बताने को राजी करने लगे।

अंत में उसे सौ रुपये में जैसे-तैसे राजी कर लिया। देहाती मजदूर उसी समय उन्हीं अपने पूर्व के साथियों को संग लेकर सड़क के पास पूर्ववत् खुदाई करने लगा। दो घण्टे बाद आडिट विभाग के अधिकारी खंदक में ठाठ से जमी उस पत्थर-शिला को ज्यों की त्यों पाकर जहाँ अचम्भे से दंग थे वहीं इंजीनियर साहब को लकवा मार गया था। आडिट विभाग के अधिकारी अभीतक आपत्ति के स्वरूप को बदलने की युक्ति में लगे हुये हैं। वहीं इंजीनियर साहब आपत्ति-निराकरण हेतु उस शिला के टुकड़े कराने की योजना में डूबे हुये हैं।

चना कुरमुरा

एक ख्वाजासरा बादशाह के बहुत मुह लगा था। वह हमेशा बादशाह से बीरबल की बुराई किया करता था और उन्हें दरबार से निकलवाने की फिक्र में रहता था। एक दिन उसने बहुत सी इधर-उधर की बातें करने के बाद बादशाह से कहा, 'जहांपनाह, आपने बीरबल को बेकार अपने पास रख छोड़ा है।'

बादशाह बोले, 'वह हर बात का जवाब अच्छा देता है।'

खोजा बोला, 'खाक जवाब देता है। मेरे इन तीन प्रश्नों का उत्तर दे तो तब जानू :—(१) पृथ्वी का बीच कहां है? (२) तारों की संख्या क्या है? (३) संसार में स्त्री-पुरुष कितने-कितने हैं?'

बादशाह ने तुरन्त बीरबल को बुलाया और इन तीनों प्रश्नों के उत्तर पूछे।

बीरबल ने दो-चार पांव इधर-उधर रख कर एक स्थान पर खूंटी गाड़ दी और कहा, 'पृथ्वी का बीच इस जगह पर है, जो खोजा न माने तो नाप ले।'

फिर एक भेड़ को पकड़ लाए और उसको बादशाह के सामने खड़ा करके कहा, 'जहांपनाह, जितने इसके शरीर में बाल हैं, उतने ही आकाश में तारे हैं।'

तीसरी बात का उत्तर देते समय बीरबल ने मुस्करा कर कहा, 'हुजूर, मर्द और औरतों का हिसाब इन खोजाओं ने बिगाड़ रखा है, ये न पुरुष हैं न स्त्रियां, यदि आप इन सबको मरवा डालें तो ठीक-ठीक हिसाब लग जाएगा।'

खोजा यह सुनते ही वहां से खिसक गया और बादशाह बीरबल की बुद्धि की प्रशंसा करने लगे।

●

बीरबल तम्बाकू खाता था किन्तु अकबर नहीं खाता था। एक दिन अकबर ने तम्बाकू के खेत में गधे को घास खाते देखकर कहा, 'बीरबल, देखा तम्बाकू कैसी बुरी चीज है, गधा तक इसको नहीं खाता।'

बीरबल ने कहा, 'हाँ हुजूर, सच है गधे तम्बाकू नहीं खाते।'

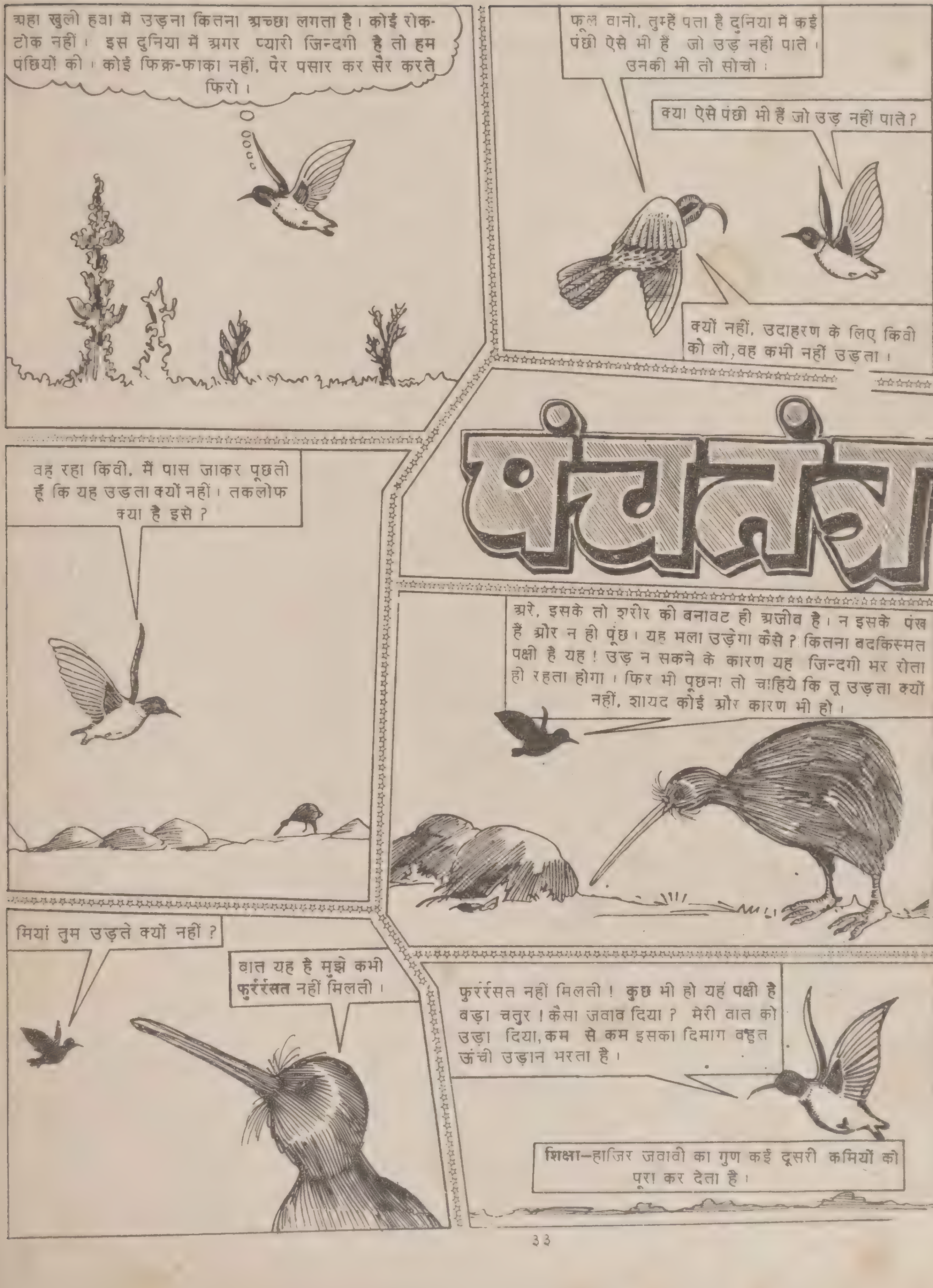
●

एक दिन बादशाह ने अपने दरबारियों से पूछा, 'हर वक्त कौन चलता है?' उत्तर में किसी ने सूर्य को, किसी ने पृथ्वी को तथा किसी ने चन्द्रमा को बतलाया। बादशाह ने जब बीरबल से पूछा तो उत्तर मिला, 'आलीजाह! महाजन का ब्याज हर समय चलता है। इसे कभी थकावट नहीं मालूम होती। दिन दूना रात चौगुना वेग से चलता रहता है।'

●

एक दिन बादशाह ने बीरबल से दो प्रश्न किये और कहा कि इनका उत्तर एक ही होना चाहिए। वे प्रश्न ये थे :—(१) बड़ी क्यों न खाई? (२) जूता क्यों न पहना?

बीरबल ने तुरन्त उत्तर दिया, 'तला न था।'



अहा खुली हवा में उड़ना कितना अच्छा लगता है। कोई रोक-टोक नहीं। इस दुनिया में अगर प्यारी जिन्दगी है तो हम पंछियों की। कोई फिक्र-फाका नहीं, पैर पसार कर सैर करते फिरो।
फूल वानो, तुम्हें पता है दुनिया में कई पंछी ऐसे भी हैं जो उड़ नहीं पाते। उनकी भी तो सोचो।
क्या ऐसे पंछी भी हैं जो उड़ नहीं पाते?
क्यों नहीं, उदाहरण के लिए किवी को लो, वह कभी नहीं उड़ता।
पंचतंत्र
वह रहा किवी, मैं पास जाकर पूछती हूँ कि यह उड़ता क्यों नहीं। तकलीफ क्या है इसे?
अरे, इसके तो शरीर की बनावट ही अजीब है। न इसके पंख हैं और न ही पूंछ। यह भला उड़ेगा कैसे? कितना वदकिस्मत पक्षी है यह! उड़ न सकने के कारण यह जिन्दगी भर रोता ही रहता होगा। फिर भी पूछना तो चाहिये कि तू उड़ता क्यों नहीं, शायद कोई और कारण भी हो।
मियां तुम उड़ते क्यों नहीं?
वात यह है मुझे कभी फुर्रसत नहीं मिलती।
फुर्रसत नहीं मिलती! कुछ भी हो यह पक्षी है बड़ा चतुर! कैसा जवाव दिया? मेरी वात को उड़ा दिया, कम से कम इसका दिमाग वहुत ऊंची उड़ान भरता है।
शिक्षा—हाजिर जवावी का गुण कई दूसरी कमियों को पूरा कर देता है।

हास्य व्यंग

इन्कलाब जूतावाद !

'कुमार अरुण पाण्डेय'

पिछले वर्ष पेरिस में एक पत्रिका द्वारा आयोजित 'कार्टून' चित्रों के मेले में मैंने एक नवजात-शिशु का एक धांसू कार्टून-चित्र देखा, जिसके नीचे अंग्रेजी में लिखा था-'इट वाज नॉट माय फाल्ट दैट आय वाज बार्न; (यह मेरी गलती नहीं है कि मैं पैदा हुआ)। उसे देखकर मेरा एक मित्र इस प्रकार हँसने लगा कि मुझे भय हुआ कि कहीं इसका हँसी स्टॉक ही खत्म न हो जाये। खैर ! भारत लौटते समय मैं उस कथित वाक्य को 'स्मगल' ही कर लाया। खैरियत यह हुई कि कस्टम वाले मुझे पकड़ नहीं पाये अन्यथा उन्हें लेने के देने पड़ जाते।

घर पहुंचते ही पहला विचार यह हुआ कि उस 'इम्पोर्टेड' वाक्य का सही उपयोग देशी तौर पर कैसे हो ? कई तर्कों के बाद मैंने एक जोड़ी जूते का कार्टून-चित्र बनाया और इसके नीचे यह मेरी गलती नहीं है कि मैं पैदा हुआ लिखकर उसे ड्राइंग रूम में टांग दिया। सुबह-शाम उस चित्र को देखता तो तबियत प्रसन्न हो उठती लोग-बाग देखते तो मेरी पीठ ठोंकते। मैं भी सोचता कि यदि एक जोड़ी जूते के चित्र-मात्र से यह इज्जत है तो कई जोड़ी असली जूते होते तो मेरा कितना जलवा होता ? बस सा'ब ! यहीं से मेरे जूता-अनुराग की कहानी शुरू होती है।

आगे चलकर यह अनुराग कुछ ऐसा रंग लाया कि मैंने एक कमरे में जूता-संग्रहालय ही खोल दिया। इस संग्रहालय में कई स्थानों से इकट्ठे किए गए, विभिन्न प्रकार के और विभिन्न कम्पनियों के नये-पुराने, सड़े-गले जूते मैंने रख छोड़े थे। यह श्रद्धा तो अब जागी थी वरना पहले मैं एक ही जूते को कई साल तक घिसता रहता था। अपने जूतों की खस्ता हालत पर मैं कतई रहम न खाता था और उनकी बधिया बैठाकर ही उन्हें अपने से मुक्त करता था। वैसे कुछ हद तक इस संग्रहालय को खोलने की प्रेरणा मुझे कायदे-आजम स्व० जिन्ना से मिली थी। सुना है उनके पास १६८ जोड़ी जूते थे। मैंने भी संग्रहित जूतों की संख्या-वृद्धि के लिए जी-तोड़ मेहनत करते हुए कूड़े-करकटों तक के ढेर से बीनकर तमाम पुराने पड़े जूते संग्रहालय को अत्यन्त श्रद्धा से समर्पित किये थे।

धीरे-धीरे मैंने संग्रहित जूतों पर उनकी पैदाइशी तारीख की चिटें लगाकर उन्हें करीने से सजा दिया। बाकी तो सब ठीक था बस, एक बात से मैं चिन्तित था। यह थी असंख्य जूतों की फौज से छूटने वाली मादक सोंधी-गन्ध की समस्या ! परिवार के अन्य सदस्यों का ध्यान रखते हुए मैंने संग्रहालय में कभी-कभी धूप सुलगाना शुरू कर दिया, अन्यथा मुझे तो वह गंध स्वर्गिक सुख की अनुभूति देती थी। बस दुःख तो था सिर्फ इस बात का कि मेरे संग्रहालय में ऐतिहासिक जूता नहीं था। सोचता था कि कहीं से अलाउद्दीन खिलजी या सुल्ताना डाकू के जूते हाथ लग जाते तो कितनी प्यारी बात होती।

जो भी हो, मैंने संग्रहालय खोलकर अपने होनहार होने का सबूत माँ-बाप को दे ही दिया। अपने ऊपर से बेरोजगारी की मोहर भी मैंने साथ ही मिटा दी थी। सिर्फ उस दिन का इन्तजार था जब मेरा संग्रहालय आम-जनता के प्रदर्शनार्थ खुलता। उस दिन किसी बड़े पुरातत्व-विशेषज्ञ को बुलाकर संग्रहालय का उद्घाटन करवाता, सरकारी-सहायता के लिए प्रार्थना-पत्र देता और संग्रहालय में प्रवेश के लिए टिकट बेचता। मेरा दावा था कि "बॉक्स-ऑफिस' के सारे रेकार्ड तोड़ दूंगा नहीं तो बेचूलाल नाम ही बदल डालूंगा।

इसी बीच मेरे मुहल्ले के होनहार कवि-वर श्री साबुन सिंह 'दानी' जी ने मुझे अपने साथ उरई में होने जा रहे एक कवि-सम्मेलन में चलने का निमन्त्रण दिया। यह न्योता मेरे और मेरे संग्रहालय के उज्जवल भविष्य का सौभाग्य-सूचक लगा। कुछ सोचकर मैंने घर से कई फटी-पुरानी बोरियाँ इकट्ठी कीं और 'जूता-प्रेम' पर लिखी अपनी एक ताजी कविता लेकर 'दानी' जी के साथ उरई रवाना हो गया।

उरई पहुंचकर मैंने 'दानी' जी से स्पष्ट कह दिया कि उनसे पहले मैं अपनी कविता पढ़ूंगा। बात स्पष्ट थी—मैं अपने साथ लाई बोरियों के भरपूर उपयोग के लिए मौका चाहता था। मुझे 'दानी' जी का पूरा विश्वास था कि वे मेरी इच्छा-पूर्ति में योग देते हुए, बोरियां पूरी तरह भरवाने के लिए श्रोताओं को कई घंटे अपनी रचनाएं सुनाकर उन्हें जूते फेंकने के लिए जी-जान से प्रेरित करेंगे।

थोड़ी ही देर बाद कवि-सम्मेलन प्रारम्भ हो गया और एक-एक कवि मंच पर आये और श्रोताओं को भाव-विभोर करते गये। अन्ततः मेरा नम्बर आया और मैं लचकता हुआ मंच पर जा धमका। मंच के एनाउन्सर ने श्रोताओं को मेरा परिचय दिया, —'अब आप के सामने आ रहे हैं लखनऊ के प्रख्यात कवि, लेखक, व्यंगकार, चित्रकार, तबला, सितार और तानपुरा वादक संगीत-कार तथा आजकल बेकार श्री बेचूलाल बी० ए०, ये आपके सामने 'जूता-प्रेम' नामक कविता का पाठ करेंगे। 'यह सुनते ही श्रोता-गण इतनी बड़ी-बड़ी डिग्रियों के मालिक को साक्षात देखने को उतावले हो उठे।

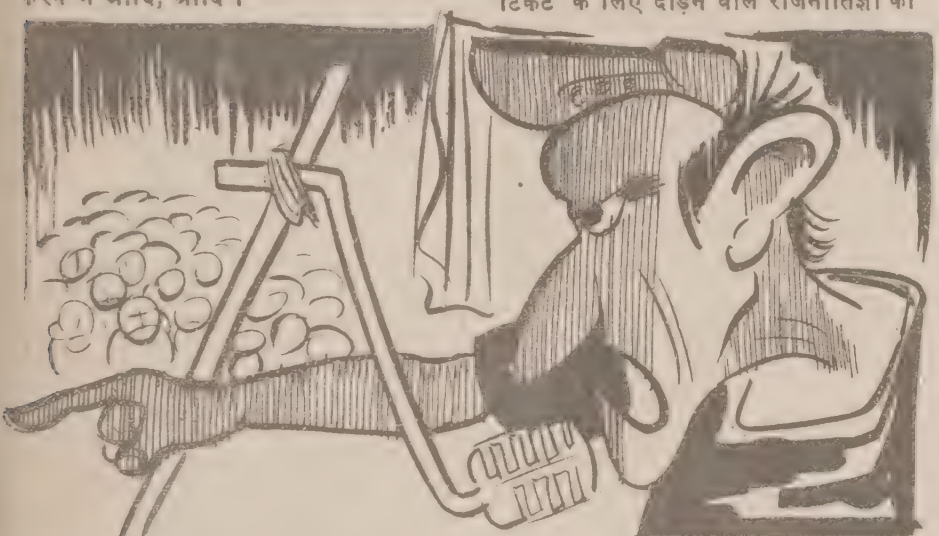
मेरे मंच पर पहुंचते ही जो बयान से बाहर शोर उठा वह मेरी प्रतिष्ठा का द्योतक था। कदाचित साक्षात जानी वॉकर को देखकर भी इतना शोर न मचा होगा कभी, खैर ! मैंने बड़े उत्साह से अपने कविता-पाठ के लिए भूमिका बांधी—

'माननीय अध्यक्ष महोदय, दोस्तों और उपस्थित श्रोताओं ! इससे पहले कि मैं अपनी कविता 'जूता-प्रेम' का पाठ करूं, यह आवश्यक है कि आपको जूते से सम्बन्धित कुछ अछूते तथ्यों से परिचित कराता चलूं ताकि आप मेरी कविता अच्छी तरह समझ सकें।

'देखिए ! जूता सम्पूर्ण मानव-जाति के लिए एक न्यामत है। यह एक ऐसा सहन-शील जीव है जो वर्षों से एक गधे की तरह आपका बोझ उठाता आया है। वास्तविकता तो यह है कि गधा भी इसकी तरह बिना चूं-चपड़ किये बोझ नहीं उठा सकता। इस लिए जूते से आपको सहनशीलता की शिक्षा लेनी चाहिए। जूतों ने, खासकर भारतीय जूतों ने हिन्दी-साहित्य को कई मुहावरे भी

दिए हैं जैसे—'मियां की जूती मियां के सर.' 'जूते की नोंक पर रखना', 'जितना बड़ा जूता, उतनी ज्यादा पॉलिश' तथा 'फटे जूते सा मुंह बनाना' इत्यादि, इत्यादि। इस प्रकार जहाँ एक ओर जूते ने हिन्दी-साहित्य को समृद्ध किया है, वहीं हिन्दी-साहित्य की मर्यादा हरण करने वाले रचनाकारों की ऐसे तमाम मंचों पर खटिया भी खड़ी की है।'

'इसके अतिरिक्त जूता हमारी कई प्रकार से मदद भी करता है, जैसे—ठोकर से लगने वाली चोट से बचाने में, चुपके से 'रबर सोल' पहन कर चोरी करने में, विमान अपहरण-कर्त्ताओं को पिस्तौल चुराकर रखने में दुश्मन का मुंह तोड़ उत्तर देने में तथा लड़कियों को सरफिरे मंजनुओं के दिमाग दुरुस्त करने में आदि, आदि।"



"जूते की महिमा कितनी अपरम्पार है, इसका अनुमान आप यूं लगा सकते हैं कि जब आप किसी व्यक्ति से मिलते हैं तो वह आपकी दो ही खूबियों पर पहले गौर करता है—पहले जूते पर, फिर आपके चौखटे पर। इस प्रकार हमारे चौखटे भी जूतों के आगे गौण हो गये हैं। जूतों की माला पहनाने के विश्व-विख्यात रिवाज को तो आप मानते ही होंगे। इसके अतिरिक्त आज के युग में बिना जूतों के कोई बात बनती भी तो नहीं है। परन्तु सावधान! जूतों के हथियार प्रयोग करने वाले, गैर सरकारी-सूत्रों के अनुसार, आजकल बहुतायत से पाये जाते हैं। आपका यह वरिष्ट साहित्यकार-बन्दा भी एक बार एक कड़क किस्म के थानेदार से टकराकर सिर्फ बेबूलाल रह गया था।"

"अब देखिए। जूता तो हमारे लिए एक वरदान है, लेकिन हम जूते के लिए कुछ भी नहीं करते। हमें चाहिए कि जूतों का भविष्य उज्जवल बनाने के लिए कुछ भी न उठा रखें। मेरा विचार है कि सरकार को चाहिए कि वह जूते को सार्वजनिक रूप से 'पूज्य' घोषित कर दे। जो व्यक्ति जूतों का अपमान करता हुआ मिले उसे आजीवन कारावास का दंड मिले। जूता उद्योग पर लगे करों में ढील देनी चाहिए। जिससे अधिकाधिक संख्या में हमारे 'ईष्ट' का निर्माण हो सके। वैसे इस दिशा में मेरे जैसे बे-रोजगारों ने काफी मदद की है। नौकरी तलाशते-खोजते हम वर्ष भर में कई जूतों की बलि देते हैं। अतः जूतों के उद्योग को बढ़ावा मिलता है। यों इस कोशिश में 'टिकट' के लिए दौड़ने वाले राजनीतिज्ञों का भी काफी योगदान रहा है।"

"अब मैं अपने देश के प्रगतिशील साहित्यकारों से अपील करूंगा कि वे 'जूता-साहित्य' की प्रगति में अपना योग दें। जब दाढ़ी, नाखून और मूछों जैसी चीजों पर किताबें लिखी जा सकती हैं, तो आखिर जूते पर क्यों नहीं? समझ नहीं आता कि हमारे छपे-अनछपे साहित्यकार भाई, जो अपनी रचनाएं छपवाने के चक्कर में जूते घिस डालते हैं, जूतों पर ही एक रचना तक नहीं कर सकते। यह जूतों से की गई नमक-हरामी नहीं तो और क्या है? याद रहे! सम्पूर्ण मानव जाति को जूतों के नमक का हक अदा करना ही होगा।"

"और दोस्तों! इस दशक में जूतों के जीवन-काल में कुछ इन्कलाब अवश्य आया है मगर बोगस! केवल फैशन के संदर्भ में लाया गया यह इन्कलाब सिर्फ जूतों की तोंद और ऊँचाई ही बढ़ा सका है। हमें जूतों का चौखटा काव्य-मय बनाने की आवश्यकता पर बल देना चाहिए इन्कलाब का ऐसा बम फोड़ना चाहिए कि हम 'एटॉमिक इलेक्ट्रॉनिक' और 'फ्यूल' चालित जूतों के सतरंगी युग से गुजर सकें। क्या ही अच्छा होगा जब आपके प्रिय कवि-गण 'एटॉमिक जूते' पहनते ही फुर्र से कवि सम्मेलनों में पहुंच जाया करेंगे। और हाँ, यदि 'मिसाइल जूतों' का भी आविष्कार हो सकता तो राह चलती छोकरियों और सम्मेलनों में एकत्र श्रोताओं की कई दुर्दान्त कठिनाइयाँ अपने आप हल हो जातीं। हमारा सरकार से आग्रह है कि वह ऐसे जूतों को अविष्कृत करने वाले वैज्ञानिकों को 'चमड़ेश्वर दी ग्रेट' जैसे किसी धांसू खिताब से सम्मानित करने को तैयार रहे।"

"एक अन्तिम बात और! अत्यन्त विशाल काया के धनी लोगों से मेरी अपील है कि वे जूतों के स्वास्थ्य पर तरस खाते हुए कृपया जूतों का इस्तेमाल कम से कम करें।"

"तो आइए बन्धुओं। मेरे कविता-पाठ से पहले हम एक जुट होकर जूतों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करें और आज से इनका सम्मान करने का संकल्प लें। मेरे साथ-साथ बोलिए, "ओ३म श्री जूताय नमः इन्कलाब जूतावाद...अरे...बोलिए न...।

परन्तु हाय! इसके तुरन्त बाद श्रोता क्या-क्या बोले वह इस सुन्दर लेख में लिखने योग्य नहीं है। हाँ, जो घटना घटी, उसके संदर्भ में वे बोरियाँ बड़ी काम आयीं जो मैं लखनऊ से साथ लेकर गया था। सभी बोरियाँ रंग-बिरंगे जूतों चप्पलों से भर गई थीं। वापसी के समय ट्रेन में खोपड़ी पर पट्टियाँ बांधे मैं यह सोच-सोचकर पुलकित हो रहा था कि लखनऊ पहुंचकर पुराने जूतों की एक शानदार दुकान खोलूंगा तथा सड़े हुए, खस्ता हाल पुराने जूतों को हिटलर और गब्बर सिंह के जूते बताकर खूब मुनाफा कमाऊंगा।

उधर ऊपरी बर्थ पर मस्ती में पान चबाते दानी जी ने तभी एकाएक मुझे आवाज दी और एक बड़ी पुरानी 'चीज' अपने 'मौलिक' और अप्रकाशित अंदाज में मुझे सुना डाली—

"जूता-ए-इश्क में रोता है क्या ?
आगे-आगे देखिए होता है क्या ?" ●

फिल्मी भूत

सुजाता 'स्नेही'

बिज्जू ने डरते-डरते घर में कदम रखा, घर की खामोशी देख कर वह समझ गया कि उसके पिता कन्हैयालाल अभी दुकान से घर नहीं आये हैं, बस वह मारे खुशी के शोर मचाता हुआ शान्ती देवी की गोद में कूद कर बैठ गया। शान्ती देवी कदाचित नींद में कोई बुरा सपना देख रही थी, चोर-चोर चिल्लाती हुई उठ बैठी मगर बिज्जू पर नजर पड़ते ही मुस्करा कर उसे भींच लिया और बोली अरे, ये तो मेरा बेटा बिज्जू है, मैं तो डर ही गई थी। फिर बोली चल उठ, खा पी ले स्कूल में पढ़ते-पढ़ते थक गया होगा फिर याद करती हुई बोली और हां आज तो तेरा इम्तहान का नतीजा भी निकला होगा, अब की मेरा बेटा जरूर पास हो गया होगा। मैंने इम्तहान पर भेजने से पहले तुझे दही पेड़ा भी तो खिलाया था वो भी पूरे पांच आने का। मगर बिज्जू को चुप देख कर बोली क्यों क्या नतीजा नहीं निकला ? मां नतीजा तो निकल गया मगर, हां मां वो तुमने दही पेड़ा मोटू हलवाई के यहां से मंगाया था न, वो दूध में पाउडर मिलाया करता है मिलावट के कारण ही मां मेरे परचे ठीक नहीं हो पाये। शान्ती देवी बोली कोई बात नहीं बेटा अब की बार मैं अपनी भैंस के दूध का दही जमाऊंगी और घर पर ही खोया बना कर उसके पेड़े बना कर तुझे खिलाऊंगी फिर देखती हूं तुझे कौन फेल करता है। चल अब चटपट खा ले तेरे बापू भी आते होंगे।

बिज्जू ने खा कर खेलने के लिये बाहर कदम रखा ही था कि कन्हैयालाल धड़धड़ाते हुए भीतर घुसे। बिज्जू पर नजर पड़ते ही अपनी भारी भरकम आवाज में बोले हां तो नवाब साहब अब की आपका नतीजा सिफर से आगे बढ़ा या नहीं—बिज्जू को चुप देख कर बोले अब तो देखो कैसी नानी मरी जा रही है, दिन भर पढ़ाई के नाम पर हल्ला-गुल्ला मचाता घूमता है फिर पूरे वेग में बोले, चल दिखा अपना नतीजा। बिज्जू के हाथ से नतीजा लेकर देखते ही उनका पारा सातवां आसमान भी पार कर गया बस आव देखा न ताव कोने में पड़ी छड़ी उठा ही तो ली और पूरी ताकत से बिज्जू की पीठ पर बरसाने लगे। बिज्जू बिलबिलाता हुआ पीड़ा वश मां-मां चिल्ला उठा। बिज्जू की चीख-चिल्लाहट सुनते ही शान्ती देवी दौड़ी आई और बिज्जू को अपने पीछे खींचती हुई बोली, तुम तो बस मेरे लड़के को एक दिन मार ही डालोगे। कभी इस तरह भी बच्चों को मारा जाता है। कन्हैयालाल अपना क्रोध दबाते हुए बोले, हाँ हाँ तुम्हारी शह ने ही तो लौंडे को सर चढ़ा दिया है अब की यह पूरी पांचवीं बार पांचवीं कक्षा में फेल हुआ है। मैं दिन भर साईकिल रिक्शे के पंचर जोड़-जोड़ कर



चार पैसा इकट्ठा करूं और यह नवाब साहब इस तरह मेरी खून पसीने की कमाई को बर्बाद करे। बस, आज से इसकी पढ़ाई-वढ़ाई बन्द, कल से यह भी मेरे साथ बैठकर पंचर जोड़ना सीखेगा। कम से कम दो पैसे तो कमाया ही करेगा। शान्ती देवी भुनभुनाती हुई बोली, हां-हां मैं खुद ही कल से अपने बेटे को पढ़ने नहीं भेजूंगी। एक तो मुआ मास्टर स्कूल में पीटे ऊपर से यहां तुम्हारी भी मार खाये। देखो मेरा बेटा बेचारा दिन पर दिन कैसा कमजोर होता जा रहा है। ईश्वर ने एक ही औलाद दी है वह भी तुम्हारी आंखों में नहीं सुहाती और वह सुबकती हुई बिज्जू के सर पर प्यार से हाथ फेरने लगी, कन्हैयालाल जी अपना क्रोध दबाते हुए भीतर चले गये।

दूसरा दिन बिज्जू के लिये स्वर्ण दिन था क्योंकि आज उसे स्कूल जो नहीं जाना था। कन्हैयालाल के दूकान जाते ही वह भी बाहर खेलने निकल गया मगर थोड़ी देर ही में वापस भी आ गया क्योंकि उसके सारे दोस्त तो स्कूल जा चुके थे वह खेले तो आखिर किसके साथ। जब कोई साथी नहीं मिला तो पुरानी कहानी की किताबों का नम्बर आया। काफी खोजबीन के बाद उसके हाथ एक किताब लगी जिसमें फिल्मी दुनिया के बड़े-बड़े सितारों के बारे में मजेदार चटपटी बातें लिखी हुई थीं बस बिज्जू उसे पाकर काफी खुश हुए कई बार सितारों के रंगीन चित्रों को देखा फिर पढ़ने बैठ गये, ज्यों-ज्यों पढ़ते जाते उनके मन में फिल्मी सितारा बनने की इच्छा बलवती होती जाती। सोचने लगे यदि मैं भी किसी फिल्म में काम करूं तो कैसा मजा आये; कारों में घूमने को मिलेगा, जो चाहे सो खाओ अच्छे-अच्छे कपड़े पहनो और जेबें तो हर समय रुपयों से ही भरी रहें, जब इतना सारा रुपया मेरे पास होगा तो सबसे पहले मैं भेंगा चाट वाले के यहां से जी भर कर पानी के बताशे खाऊंगा, वह अभी तो उधार मांगने पर अकड़ दिखाता है। जब मैं फिल्मी हीरो बन जाऊंगा तब देखना कैसे आगे पीछे घूमेगा, कहेगा, साब, आप ही का तो ठेला है जो चाहे जो खाइये पैसे किस बात के और सोचते-सोचते ही बिज्जू के मुंह से लार टपक पड़ी जिसे उसने जल्दी से सुड़क लिया।

अब सारा मामला तो ठीक था मगर समस्या यह थी कि फिल्मों में आखिर जाये तो कैसे ? घर में कभी इतना पैसा ही नहीं रहा कि वह चुरा कर बम्बई भाग सके। वैसे उन्हें पूरा विश्वास था कि यदि वह बम्बई पहुंच जायें तो कोई भी डायरेक्टर एक ही बार देख कर उन्हें फिल्म में हीरो का रोल तो अवश्य ही दे देगा उनकी विचार धारा बदली, उन्होने सोचा क्यों न खुद ही फिल्म बनायें आखिर फिल्म लाइन में भी तो काफी नये-नये डायरेक्टर पिक्चर बना कर एक ही बार में चोटी के डायरेक्टर की लाइन में आ जाते हैं और फिर इसके लिये किसी पढ़ाई की भी आवश्यकता नहीं है। फिल्म में काफी बडी-बडी हस्तियों के बारे में वह पढ चुके हैं

शेष पृष्ठ २८ पर

एक के बाद एक चुनाव हुए। पुराने नेता जाते रहे, नये नेता आते रहे। गरीब जनता ने हर नये आने वाले का विश्वास किया, यह सोचकर कि अब जो आया है, वह उसके सब दुख दूर कर देगा, और अब उसके दिन फिर जायेंगे।

सवाल यह है

दिन तो फिरे, मगर किसके ?



अगले सप्ताह आपकी सेवा में प्रस्तुत किया जा रहा है, एक और लाजवाब सवाल।

पृष्ठ ३६ से आगे

कि वो सिर्फ अंगूठा टेक हैं। मगर, वह तो चौथी जमात पास हैं और पांचवीं जमात में पूरे पांच साल पढ़े हैं। बस इतना ज्ञान तो काफी है और पिक्चर में काम करने को तो उनके सभी साथी तैयार हो जायगे रही शूटिंग की बात तो पहले वह पिक्चर की रिहर्सल करेंगे जब बड़ी-बड़ी हस्तियों उनकी लगन और रिहर्सल देखेंगी तो शायद कोई प्रोड्यूसर उनको लेकर फिल्म ही बना डाले बस यह सोचते ही मारे खुशी के उनका पेट फूलने लगा, चाहने लगे बस आनन-फानन में रिहर्सल शुरू कर दें मगर समस्या यह थी कि अभी तक स्कूलों की छुट्टी नहीं हुई थी और उनके यार दोस्त आज स्कूल से गोल मार कर भी नहीं आये थे। खैर राम-राम करके किसी तरह दिन गुजरा, स्कूल से लड़के वापस आने लगे बिज्जू ने सबसे पहले अपने दोस्त कैलाश को पकड़ा। जिस प्रकार एक फिल्म में हीरो का होना जरूरी है उसी प्रकार बिज्जू की समझ में एक अदद विलेन का होना भी आवश्यक है और विलेन का रोल कैलाश पर फिट भी कैसा बैठता है जब वह अपने गले में लाल रूमाल बांध लेता है तो बस प्रेम चोपड़ा और रंजीत को भी मात कर देता है और उनकी नजरों के सामने स्कूल से भाग कर देखी गई कई फिल्मों के सीन में विलेन का चेहरा घूम गया। बस बिज्जू जा पहुंचे कैलाश के घर और उसे विलेन के रोल के लिये तैयार कर लिया।

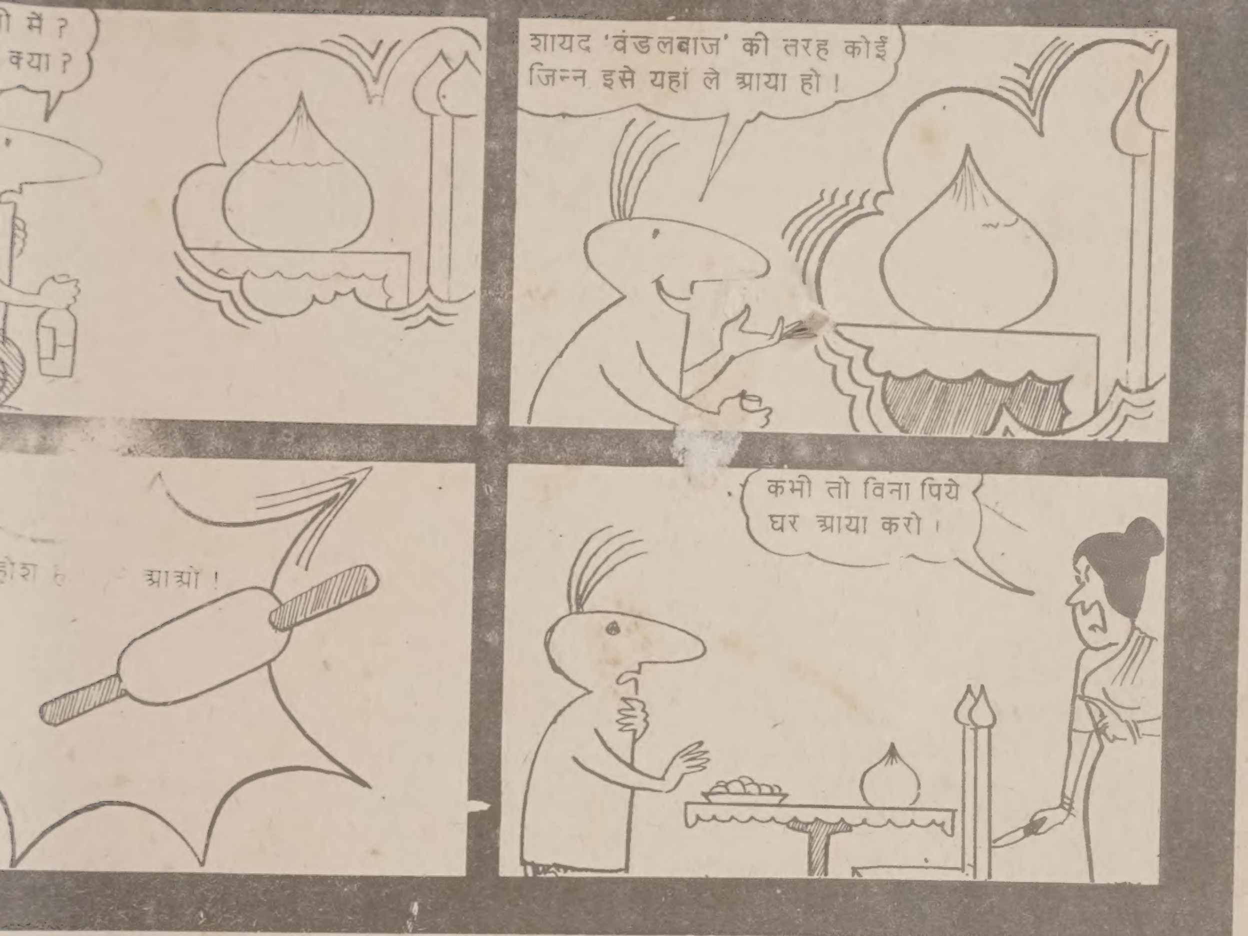
कैलाश के बाद कई अन्य लड़कों का भी चयन हुआ अन्त में जगह की समस्या आई। यूं तो जगहें काफी थीं मगर हर जगह घर वालों द्वारा पकड़े जाने का भय था आखिर में फुब्बारे वाला पार्क चुना गया वो घर से दूर भी था और किसी के वहां पहुंचने या हस्तक्षेप करने का भी खतरा नहीं था बस अब रिहर्सल की देर थी मगर बिना हीरोइन के भी कभी पिक्चर बनी है।

- तो बस तय हुआ कि फिलहाल रिहर्सल में तो किसी तरह यूं ही काम चलाया जाये बाद में तो खुद-ब-खुद बड़ी-बड़ी हीरोइनें उनके साथ काम करना अपना सौभाग्य मानेंगी। बस जरूरत के लिये तराशी हुई झाड़ी को ही कपड़ा उढ़ा कर हीरोइन का रूप दिया गया।

अब सीन यूं था कि हीरोइन हीरो का इन्तजार कर रही है, तभी हीरो पीछे से आकर हीरोइन के गले में हाथ डाल कर चौंका देता है तभी विलेन भी उनके बीच में बाधा उत्पन्न करने आ जाता है। चूंकि हीरो का पार्ट बिज्जू को अदा करना था इसलिये वो चाल में एक मस्ती सी भर कर हीरोइन बनी झाड़ी के गले में बाहें डालने को बढ़ता है। पास ही विलेन अर्थात कैलाश भी अपनी बारी का इन्तजार करता हुआ खड़ा है। बिज्जू झूमता हुआ ज्यों ही झाड़ी को बेख्याली में कस कर दबोचता है कि तुरन्त चीखता हुआ भाग खड़ा होता है। असल में हुआ यह कि झाड़ी में शहद की मक्खियों ने अपना छत्ता बना रखा था। बिज्जू के झाड़ी कस कर दबोचने से सारी मक्खियां छत्ते में से निकल कर उसके चिपट जाती हैं अब आगे-आगे बिज्जू और पीछे-पीछे शहद की मक्खियां। जब बिज्जू दौड़ते-दौड़ते बेदम हो गया तो हार कर उसने एक गन्दे नाले में छलांग लगा दी तब कहीं जाकर मक्खियों ने उसका पीछा छोड़ा।

मक्खियों के काटने से बिज्जू का शरीर फूल कर कुप्पा हो गया था। कई दिनों बाद बेचारे चलने फिरने योग्य हो पाये अब उन्होंने नये सिरे से रिहर्सल करने को सोची। अबकी बार उन्होंने सोच लिया था कि हीरोइन वाला रिहर्सल नहीं करेंगे। अब की कहानी के मुताबिक हीरो और विलेन में लड़ाई होगी जैसे लगभग हर फिल्म में होती है। पहले विलेन हीरो की पिटाई करेगा फिर हीरो विलेन को उठा-उठाकर पटकेगा, बस कैलाश और बिज्जू दोनों आ गये मैदान में। इधर से बिज्जू गये और उधर से कैलाश अकड़ता हुआ आया। फिल्म के मुताबिक पहले बिज्जू को कैलाश के हाथों पिटना था। बस कैलाश ने आव देखा न ताव जड़ दिया एक घूंसा बिज्जू के जबड़े पर, बिज्जू को लगा मानों आंखों के सामने अंधियारी रात में फुलझड़ियां छूटने लगी हों और शायद पूरा जबड़ा ही हिल गया था। बस हाथ से जबड़ा थाम कर गिर गये। बेचारा कैलाश तो एकदम हक्का-बक्का रह गया। उसे तो कहानी के मुताबिक पहले बिज्जू को पीट कर फिर उसके हाथों पिटना था मगर वो तो एक घूंसे में ही लमलेट हो गया।

करीब घंटे भर बाद बिज्जू को होश आया और वह जबड़ा दबाये घर की ओर चल दिया। हिलते दांतों को ही संभलने में काफी दिन लग गये। खैर फिर भी बिज्जू की फिल्म बनाने की स्कीम में कैसा भी अन्तर नहीं पड़ा, अलबत्ता अब की उन्होंने सोच लिया था कि विलेन का भी चक्कर पालेंगे कुछ फिल्में बिना विलेन की मार के भी हिट हो जाती हैं और अभी हाल में देखी कुछ फिल्में इसका उदाहरण। नई कहानी के अनुसार एक बच्चा पानी डूबते हुए बचाओ-बचाओ चिल्ला रहा है उधर से हीरो गुजरता है आवाज सुन पानी में कूद कर डूबते बच्चे को बचा हैं। इस कहानी में किसी भी प्रकार जोखिम नहीं थी बस नदी तालाब तक की देर थी। आखिर खोज बीन करते-क धोबियों के तालाब तक पहुंच ही गये, तालाब में धोबी कपड़े धोया करते थे। अब एक बच्चे की जरूरत थी जो पानी कूद कर उनकी फिल्म को सफल बनाये कोई छोटा बच्चा तो उनकी मित्र मंडली भी नहीं था और बड़े लड़के के कारण कह में वो बात नहीं रहेगी, आखिर उन्होंने मु धोबी के लड़के छोटू को पकड़ लिया उसे तरह-तरह के प्रलोभन देकर पानी कूदने को तैयार करने लगे मगर, छोटू कि भी तरह पानी में कूदने को तैयार नही रहा था। आखिर काफी डराने धमकाने वह राजी हो ही गया और तालाब के कि जाकर खड़ा हो गया मगर शायद छोटू इ ज्यादा डर गया था कि पानी में कूदने पहले ही बचाओ-बचाओ चिल्लाने लगा की आवाज सुनते ही आसपास की झोपड़ि में से लोग लाठी डंडे लेकर निकल प बिज्जू को छोटू के पीछे तालाब के कि खड़ा देख कर उन्होंने समझा कि बिज्जू छोटू को तालाब में ढकेल कर डालना चाहता है। बस सब डंडे लेकर पकड़ो चिल्लाते हुए बिज्जू के पीछे दं जब बिज्जू ने यह नजारा देखा तो स दौड़ पड़े। सबको दौड़ते देख गली का भी बिज्जू के पीछे दौड़ पड़ा और उ उछल कर उनकी पेंट पकड़ने लगा म बिज्जू तो फ्रंटियर मेल की रफ्तार से जा थे। पेंट तो कुत्ता क्या पकड़ पाता अल उसने उनकी पेंट को नेकर जरूर बना दि आखिर में बिज्जू ने घर ही में जाकर द ली और फटाक से दरवाजा बन्द कर लि अब तक उन पर से फिल्म का भूत चुका था कान पकड़ते हुए बोले मेरी ह मेरे बाप की तौबा जो अब कभी फिल्म बारे में सोचा और उन्होंने अगले दिन लिये बस्ता लगाना शुरू कर दिया शायद म लगा कर पढ़ने का निश्चय कर चुके थे।



...हेली

...नाम
...मार-नई दिल्ली
...मर-मुक्तसर
...ई दिल्ली

...पहेली
...पाल त्यागी
...कर नगर

सेवा

अखिलेश्वर

कमरे में आने वाले व्यक्ति को
फिल्म निर्माता समझ
आउट-डेटिड हीरो ने
टेलीफोन उठाया
और गुस्से में बड़बड़ाया,
'पन्द्रह फरवरी ? नहीं साहब
'घरौंदे' के लिए डेट दे चुका हूं।
क्या ? सोलह ? सौरी
'प्यास' की शूटिंग के लिए
जैसलमेर जा रहा हूं।
आज ? ओह नो।
थका मांदा हूं,
सीधा होनोलूलू से आ रहा हूं।
फिर चोंगा रख आंगतुक से बोला,
'कहिए, आपकी क्या सेवा कर सकता हूं ?'
आगन्तुक बोला,
'साहब, मैं सेवा कराने नहीं
करने आया हूं।
आपके फोन का रिसीवर खराब था,
उसे बदलने के लिये
नया चोंगा लाया हूं।

शुभकामना

अखिलेश्वर

व्यस्त हास्य अभिनेता को
नवोदित तारिका ने
अपनी शादी का निमंत्रण भेजा
और प्रार्थना की
कि वह सपरिवार आए।
अभिनेता ने लिखा—
हमारी ओर से शुभकामनाएं
ईश्वर यह दिन
तुम्हारे जीवन में
बार बार लाए

पृष्ठ 13 से आगे

'दैट इज ग्राल डॉक्टर वर्मा,' वकील ने कहा, मेरा ग्रापसे कोई ग्रौर प्रश्न नहीं।'

जज ने दलजीत से कहा—

'ग्रपराधी दलजीत···तुम्हें डॉक्टर से कुछ पूछना है ?'

'येस यूग्रर ग्रानर।

'ग्रदालत ग्राज्ञा देती है—पूछिये।'

दलजीत ने डाक्टर वर्मा की ग्रोर देखा ग्रौर बोला—

'डॉक्टर वर्मा! क्या विज्ञान ने ग्रभी तक कोई ऐसा ग्राला निकला है जिस द्वारा बच्चे के ग्रसली पिता का ज्ञान हो सके ?'

'जी नहीं—।'

'तो फिर ग्रापने कैसे समझ लिया कि मिस मोनिका के बच्चे का पिता मैं ही हूं।'

'मुझे मोनिका ने बताया था।'

दलजीत ने जज की ग्रोर देखा ग्रौर बोला—'मी लार्ड, नोट किया जाए···डॉक्टर वर्मा को मिस मोनिका ने बताया था कि बच्चा मेरा है···यूग्रर ग्रानर दुनिया जानती है कि मोनिका ग्रविवाहित है···ग्रगर वह मां बनने वाली है··· तो कुंग्रारी मां बनने वाली है। बच्चा नाजायज है···उसके पाप की निशानी है—ऐसी सूरत में क्या यह नहीं सोचा जा सकता कि जो ग्रौरत बिना शादी के मां बन सकती है···वह झूठ भी बोल सकती है।'

'यह परिस्थितियों पर निर्भर है।'

'यूग्रर ग्रानर··· मैं ईश्वर को हाजर नाजर मानकर कहता हूं कि मोनिका के बच्चे का बाप मैं नहीं हूं।'

वकील इस्तगासा बोला—

'यूग्रर लार्डशिप! ग्रपराधी दलजीत ने जिस ढंग से यह नुक्ता उठाया है उसके लिए मैं उसकी बुद्धि की प्रशंसा करता हूं। हो सकता है यही युक्ति ग्रपराधी के मस्तिष्क में पहले ही से हो ग्रौर इसीलिए वह मिस ग्रग्रवाल से शादी करने पर सहमत नहीं हुग्रा हो लेकिन मिस ग्रग्रवाल का चरित्र शीशे के सामन साफ ग्रौर निष्कलंक है···इसका प्रमाण मिस ग्रग्रवाल का वह करेक्टर सर्टिफिकेट है जो उन्हें कालिज से मिला है—ग्रौर जहां तक ग्रपराधी के प्रश्न के उत्तर का संबंध है उसके लिए मैं ग्रदालत में कुछ गवाह पेश करने की ग्राज्ञा चाहूंगा···मेरा पहला गवाह है मिस्टर ग्रशोक, मैनेजर होटल होराईजन।'

दलजीत को ऐसे लगा जैसे उसके माथे से कोई बहुत भारी चीज ग्रा टकराई हो—थोड़ी देर बाद होटल होराईजन का मैनेजर गवाहों के कटघरे में था। उससे सच बोलने की शपथ लिए जाने के बाद वकील ने पूछा—

'मिस्टर ग्रशोक, ग्राप कब से होटल होराईजन के मैनेजर हैं।'

'जब से होटल बना है।'

होटल होराईजन के मैनेजर से प्रश्नोत्तर चल रहे थे ग्रौर दलजीत को उनकी ग्रावाजें बड़ी दूर से ग्राती ग्रनुभव हो रही थीं। उसे लग रहा था जैसे कोई भयानक मकड़ी धीरे धीरे उसके गिर्द ग्रपना जाल बुनती जा रही हो। उसकी कल्पना में होटल होराईजन का वह दृश्य घूम गया जब वह मोनिका से मिलने वहां गया था—उस समय काउंटर गर्ल की व्यंग भरी मुस्कराहट, वेटरों का ग्रजीब व्यवहार ग्रौर सफाई करने वाली लड़कियों का हंसना—यह सब बातें इसी पहले से बनाए गए षड्यन्त्र की कड़ियां थीं—उसे लगा कि वह चारों ग्रोर से घिर चुका है ग्रौर मोनिका ग्रौर सेठ ग्रग्रवाल के जाल से किसी प्रकार नही निकल सकता।

एक-एक करके गवाह ग्रा रहे थे···होराईजन होटल के मैनेजर के बाद काउंटर गर्ल वह रजिस्टर लिए ग्राई जिसमें दलजीत ग्रौर मोनिका का नाम लिखा था···फिर वेटर ग्राया जिसने उस रूम में व्हिस्की ग्रौर खाने का सामान सर्व किया था···बिल भी ग्रदालत में पेश किए गए—बाद में वह लड़कियां भी ग्राईं जिन्होंने कमरे की सफाई की थी।

यह सारी कार्यवाही नलिनी बड़े ग्राश्चर्य से देख रही थी। धीरे-धीरे उसके मन में यह बात बैठती जा रही थी कि उसके भैया का ग्रवश्य ही मोनिका से प्यार का सम्बन्ध था···ग्रौर बच्चा उसी का था।

जज की भारी ग्रावाज ग्रदालत के कमरे में गूंज उठी।

'ग्रपराधी दलजीत कुमार सक्सेना··· मुकदमे की कार्यवाही, गवाहों की शहादतें ग्रौर मिस ग्रग्रवाल का बयान सुनने के बाद ग्रदालत इस फैसले पर पहुंची है कि तुमने एक निर्दोष भोली-भाली लड़की को ग्रपने प्यार के जाल में फांसकर उसकी इज्जत लूटी है ग्रौर उसे बिन ब्याही मां बनने पर मजबूर किया है···ग्रदालत के फैसले के ग्रनुसार तुम्हें या तो मिस मोनिका ग्रग्रवाल से शादी करनी पड़ेगी या पांच बरस की कड़ी सजा भुगतनी पड़ेगी···साथ ही उस बच्चे को भी ग्रपनाना होगा जो मिस मोनिका की कोख से जन्म लेने वाला है···।

दलजीत के मस्तिष्क में ग्रसंख्य छनाके से गूंज उठे···शादी या पांच बरस की कड़ी कैद ?···ग्रौर साथ ही एक बच्चे का पालन—!! दलजीत ने मोनिका की ग्रोर देखा ग्रौर उसके मस्तिष्क में एक घृणा का धुग्रां-सा उठा—फिर उसने मां ग्रौर बहन की ग्रोर देखा—उसे लगा जैसे वह पांच वर्ष के लिए जेल चला गया है—उसकी मां सड़क पर भीख मांग रही है—नलिनी को चारों ग्रोर से समाज के भेड़िये नोच-खसोट रहे हैं—दूसरे ही क्षण दलजीत ने एक झुरझुरी सी ली—तभी जज की ग्रावाज गूंजी—

'ग्रदालत ग्रपराधी का निर्णय सुनने के लिए लंच तक समय देती है—ग्रगर ग्रपराधी शादी के लिए सहमत हो जाता है तो उसे मुक्त कर दिया जाए नहीं तो हथकड़ियां डालकर जेल में पहुंचा दिया जाए।'

'यूग्रर ग्रानर—।' दलजीत ने जल्दी से कहा, 'मैं शादी के लिए तैयार हूं।'

दलजीत को यूं लगा जैसे यह शब्द कहते समय किसी ने उसके सीने में ग्राग में तपाई छुरी से एक रेखा-सी खींच दी हो। उसके होंठ दृढ़ता से भिंचे हुए थे। दूसरी ग्रोर मोनिका के होंठों पर एक विजयी मुस्कराहट खेल रही थी—उसका सिर गर्व से तन गया था।

मोनिका के कमरे में सहेलियों के ठहाकों की झंकारें बिखरी हुई थीं—इस समय उस का कमरा दुल्हन के कमरे की भांति सजा था—मोनिका दुल्हन बनी शानदार गदेले मसहरी पर झुकी बैठी थी—चारों ग्रोर खुशबूएं बिखरी हुई थीं—रंग-बिरंगे फूल फर्श पर भी बिखरे थे ग्रौर सेज पर भी लटक रहे थे।

मोनिका ग्रौर दलजीत के फेरे मो[illegible] की कोठी पर हुए थे। बारात बड़ी [illegible] से ग्राई थी। दलजीत एक हार गले [illegible] हुए था ग्रौर उसके साथ केवल [illegible] ग्रौर बहन थीं। सेठ ग्रग्रवाल ने प्र[illegible] था कि वह उनके लिए एक कोठी [illegible] कर देगा जहां से बारात सज-धज[illegible] के लेकिन दलजीत ने इन्कार कर [illegible] दिन के शादी के लिए सेठ से कोई [illegible] मन कार नहीं किया—

क्रमशः